



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 9]
No. 9]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जनवरी 12, 2007/पौष 22, 1928
NEW DELHI, FRIDAY, JANUARY 12, 2007/PAUSA 22, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 12 जनवरी, 2007

प्रारंभिक जांच परिणाम

विषय : चीन जन. गण. के मूल के/अथवा वहां से निर्यातित प्लेट बेस स्टील व्हील्स के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच

सं. 14/8/2005-डीजीएडी.-वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क का अभिज्ञान, आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली (जिसे एतदपश्चात् नियम भी कहा गया है) 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

1. नीचे वर्णित प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है:-

(i) दिनांक 31 मई, 2006 को निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने उपर्युक्त नियमों के अंतर्गत भारत के राजपत्र में प्रकाशित एक सार्वजनिक सूचना (जांच शुरुआत अधिसूचना) के द्वारा चीन जन.गण. (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित प्लेट बेस स्टील व्हील्स (जिन्हें एतदपश्चात् संबद्ध उत्पाद/वस्तु कहा गया है) के आयातों के संबंध में एक पाटनरोधी जांच शुरु करने की घोषणा की थी। यह पाटनरोधी जांच घरेलू उद्योग की ओर से मै0 कल्याणी लेमर्ज लि0 पुणे और व्हील्स इंडिया लि0, चेन्नई (आवेदक) जो उक्त उत्पाद के घरेलू उत्पादन के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं, द्वारा दायर संयुक्त आवेदन के पश्चात् शुरु की गई थी। आवेदन पत्र में उक्त उत्पाद के पाटन और इसके परिणामस्वरूप होने वाली वास्तविक क्षति का साक्ष्य अन्तर्विष्ट था जिस कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण करने और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की अनुशंसा

करने जिसे यदि लगाया जाता है तो यह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगी, के लिए नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच की शुरुआत को सही ठहराने के लिए पर्याप्त माना गया था ।

(ii) उपर्युक्त नियम 5 के उप-नियम (5) के अनुसार प्राधिकारी ने जांच शुरू करने से पहले भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास को आवेदक से पूर्ण दस्तावेजों सहित आवेदन प्राप्त होने की सूचना दी थी;

(iii) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (2) के अनुसार प्राधिकारी ने उक्त सार्वजनिक सूचना की प्रति ज्ञात निर्यातकों, उत्पादकों, उद्योग संघों, संबंधित देश के दूतावास और आवेदकों को अग्रेषित की थी और उन्हें अपने विचारों से लिखित में प्राधिकारी को अवगत कराने का अवसर प्रदान किया था ।

(iv) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (3) के अनुसार प्राधिकारी ने आवेदन की एक प्रति को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने के लिए प्रश्नावली के साथ सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में संबद्ध देश के दूतावास को उपलब्ध कराया था । चूंकि जांच शुरू करने के प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य पर चीन जन.गण. में संबद्ध उत्पाद की उत्पादन की निर्मित लागत के आधार पर विचार किया गया था, इसलिए प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को सूचित किया था कि उनका आवेदकों के दावे की यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा (7) एवं (8) के आलोक में जांच करने का प्रस्ताव है । ज्ञात निर्यातकों से पैराग्राफ 8 के उप-पैराग्राफ (3) में यथा उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए अनुरोध किया गया था ताकि प्राधिकारी उन सहयोगी निर्यातकों/उत्पादकों को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार प्रदान करने के संबंध में विचार करने में सक्षम हो सके जो यह प्रदर्शित कर सकते थे कि वे उक्त पैराग्राफ में निर्धारित मानकों को पूरा करते थे ।

(v) उपर्युक्त नियम 6 के उप-नियम (4) के अनुसार प्राधिकारी ने संबंधित प्रश्नावली की एक प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों और भारत में स्थित संबद्ध देश के दूतावास और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध करायी थी ।

(vi) नई दिल्ली स्थित संबद्ध देश के दूतावास को भी जांच शुरुआत के संबंध में सूचना दी गई थी और दूतावास को उनके देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए सलाह देने का अनुरोध किया गया था ।

(vii) प्राधिकारी ने संगत सूचना प्राप्त करने के लिए संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी थीं ।

(क) झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं० लि०, नार्थ सर्किल रोड, स्टेट हाइवे 319, झांगझोऊ सिटी, चीन ।

(ख) झिजियांग ईस्टर्न टॉप ग्रुप कार्पोरेशन, 85, जियांगसे रोड, जियोजियांग तार्ईझोऊ-झिजियांग, चीन ।

(ग) झिजियांग झिगु आटोमोबाइल कम्पोनेंट्स मैनुफैक्चरिंग कं. लि., 28 फेंगशोऊ रोड, फूयांग सिटी, झिजियांग प्रोविन्स, चीन ।

केवल एक निर्यातक/उत्पादक ने निर्यातक प्रश्नावली और जांच शुरूआत के नोटिस का सही ढंग से उत्तर दिया था ।

(viii) आयातक प्रश्नावली के साथ जांच शुरूआत अधिसूचना की एक प्रति भी आवेदन में सूचीबद्ध विभिन्न आयातकों को भेजी गई थी ।

(क) टाटा मोटर्स लि० 24, होमी मोदी स्ट्रीट, हुतात्मा चौक, फोर्ट, मुम्बई ।

(ख) आयशर मोटर्स लि., 79-80, सत्कार बिल्डिंग, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-19

तथापि, केवल एक आयातक से आयातक प्रश्नावली की विधि और ढंग से उत्तर प्राप्त हुआ है ।

(ix) जांच शुरूआत अधिसूचना की एक प्रति आवेदन में सूचीबद्ध संबद्ध देश के औद्योगिक प्रयोक्ताओं को भी भेजी गई थी ।

(क) वोल्वो इंडिया प्रा.लि., यालाचहाली टावरेकरे पोस्ट, होसाकोटे, बेंगलूर ।

(ख) अशोक लीलैंड लि., 19, राजाजी सलाई, चेन्नई ।

(ग) स्वराज माजदा लि०, गांव आसरोन जिला नवांशहर, पंजाब ।

(घ) महिन्द्रा एंड महिन्द्रा लि०, आटोमोटिव सेक्टर रोड नं. 13, वर्ली, मुम्बई ।

(x) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया था ।

(xi) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय अंश को प्राधिकारी द्वारा रखी जाने वाली एक सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध रखा और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए खुला रखा था ।

(xii) इस अधिसूचना में XXXX हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई और प्राधिकारी द्वारा नियमों के अंतर्गत विचार की गई सूचना का प्रतीक है ।

(xiii) पाटन एवं क्षति की जांच में 1 जनवरी, 2005 से 31 दिसंबर, 2005 तक की अवधि जिसे जांच अवधि अथवा पी ओ आई भी कहा गया है, शामिल की गई थी । क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जांच में 1 अप्रैल 2002 से जांच अवधि की समाप्ति तक की अवधि (जिसे क्षति अवधि भी कहा जाता है) शामिल की गई है ।

(xiv) प्राधिकारी ने पाटन एवं परिणामी क्षति के प्रारंभिक निर्धारण के प्रयोजनार्थ आवश्यक समझी गई सभी सूचनाएं प्राप्त की और उनका सत्यापन किया था । प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जांच की थी । आवेदकों द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर यह पता लगाने के लिए कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा । सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के आधार पर उत्पादन की लागत और भारत में संबद्ध वस्तुएं बनाने और उनकी बिक्री करने की लागत का परिकलन करने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण किया गया था ।

(xv) जांच शुरूआत सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन के लिए फिक्की, सी आई आई, एसोचैम, एक्साईज लॉ टाइम्स आदि को भेजी गई थीं ।

ख. विचाराधीन उत्पाद

2. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीन जन.गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फ्लैट बेस स्टील व्हील्स (जिनका शेड व्हील्स, डिस्क व्हील्स के रूप में भी वर्णन किया गया है और जिन्हें संबद्ध वस्तुएं भी कहा गया है) जिनका आकार 16" से 20" नामिनल व्यास है और इनका प्रयोग वाणिज्यिक वाहनों में ट्यूब टायर अनुप्रयोग में किया जाता है । पहिया डिमाउंटेबल रिंग के साथ रिम और डिस्क का समूह होता है । अलग-अलग लाइनों में उत्पादित रिम और डिस्क एक पहिया बनाने के लिए एक साथ जोड़ा जाता है जिसे वाहन की धुरी में चढ़ाया जाता है और टायरों के साथ फिट किया जाता है, वाहन चलने में समर्थ हो सके । हल्के, मध्यम एवं भारी वाहनों के रूप में वर्गीकृत वाणिज्यिक वाहनों में ट्रक, ट्रैलर और टेम्पो सहित बस, लॉरियां होती हैं ।

3. वाहनों के सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 87 के अंतर्गत उपशीर्ष 870870 के तहत "रेलवे अथवा ट्रैमवे रोलिंग स्टॉक से इतर वाहन और उनके हिस्से पुर्जे तथा उपकरण" श्रेणी के अंतर्गत परिभाषित किया गया है । इस उत्पाद में सीमाशुल्क उप-शीर्ष 8708.70 के अंतर्गत वर्गीकरण योग्य स्टील व्हील्स के सभी रूपभेद शामिल हैं लेकिन प्राधिकारी ऊपर सूचीबद्ध वाहनों अर्थात् ट्रैक्टर, यात्री कार, मोटरसाइकिल टैंक एवं अन्य बख्तरबंद लडाकू वाहन, साइकिल, स्कूटर, वायुयान, अर्थ-मूवर्स, पशुओं द्वारा खींचे जाने वाले वाहन हाथ से चलाए जाने वाले वाहनों और विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र से परे ट्यूबरहित टायर अनुप्रयोगों में प्रयुक्त होने वाले वाहनों से इतर वाहनों में प्रयुक्त व्हील्स को बाहर रखना उचित समझते हैं । तथापि, सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और किसी भी प्रकार से वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है ।

ग. समान वस्तु

4. आवेदकों ने दावा किया है कि उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएं संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित वस्तुओं के समान वस्तुएं हैं । याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं और संबद्ध देश से निर्यातित वस्तुओं में कोई विशेष अंतर नहीं है । समान वस्तु के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि समान वस्तु की परिभाषा से संबंधित नियम 2 (घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का मतलब एक ऐसी वस्तु होती है जो सभी मायनों में जांचाधीन वस्तुओं अथवा ऐसी किसी वस्तु की अनुपस्थिति में जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं से निकटता से मेल खाती हुई दूसरी वस्तु के 'समान' अथवा 'सदृश' होती है । इस बात की पुष्टि करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है, तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं प्रयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशेषताओं पर प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है । जांच के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की संबद्ध देश से आयातित और निर्यातक देश के बाजार में बेची जाने वाली वस्तुओं के समान विशेषताएं हैं । उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में प्राधिकारी का मानना है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित व्हील्स और संबद्ध देश से आयात किए जा रहे और संबद्ध देश में बेचे जा रहे व्हील्स नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तुएं हैं ।

घ. घरेलू उद्योग

5. आवेदन मै0 कल्याणी लैमर्ज लि0 और व्हील्स इंडिया लि0 द्वारा संयुक्त रूप से दायर किया गया है। ये उत्पादक संबद्ध वस्तु के अकेले दो घरेलू उत्पादक हैं और उन्होंने वर्तमान जांचों से संगत सूचना उपलब्ध करायी है। उन्होंने प्रस्तावित जांच में भाग लेने के लिए भी सहमति दी है। चूंकि आवेदक घरेलू उत्पादन के 100 प्रतिशत हिस्से का उत्पादन करते हैं, इसलिए उपर्युक्त नियमावली के नियम 5 के अंतर्गत स्थिति संबंधी अपेक्षा पूर्ण रूप से पूरी की गई है।

ड. पाटन

6. सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क (ग)। के अंतर्गत

'किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:

'व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु के लिए तुलनीय कीमत जब यह उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में उपभोग के लिए हों;

अथवा

'जब व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हुई हो अथवा जब बाजार की विशेष स्थिति अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों से एक उचित तुलना की अनुमति न मिलती हो तो सामान्य मूल्य या तो

'(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधि कीमत जब यह निर्यातक देश या क्षेत्र से किसी उपयुक्त तीसरे देश को निर्यात किया गया हो जैसा कि उप-धारा (6) के अंतर्गत बनाये गए नियमों में निर्धारित किया गया है; या

(ख) प्रशासनिक, बिक्री एवं सामान्य लागतों तथा लाभों के लिए तर्कसंगत वृद्धि के साथ उद्गम के देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत जैसाकि उप धारा (6) के अंतर्गत बनाये गए नियमों के अनुसार निर्धारित किया गया है'.

बशर्ते कि उद्गम के देश से इतर देश से वस्तु के आयात के मामले में और जहां वस्तु का निर्यात के देश के जरिए मात्रा यानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का निर्यात के देश में उत्पादन नहीं किया गया है अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, तो सामान्य मूल्य का निर्धारण उद्गम के देश में इसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।'

7. प्राधिकारी ने धारा 9 क (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी है। झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं. लि. झांगझोऊ सिटी, चीन ने प्राधिकारी को उत्तर दिया है।

8. याचिकाकर्ताओं ने संबद्ध वस्तुओं के विभिन्न मापदण्डों के रूप में व्हील आकार, केन्द्रीय बोर का व्यास, पिच केन्द्र का व्यास, बोल्ट छिद्र, स्टिड होल डेसिगनेशन, ऑफसेट, हाफ ड्युअल, भार एवं व्हील लोड को अभिज्ञात किया है। निर्यातकों ने भी अपने उत्तर में इनमें से कुछ मानदण्डों को अभिज्ञात किया है। की गई प्रारंभिक जांच के आधार पर प्राधिकारी ने आगे जांच होने तक सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत के बीच तुलना के प्रयोजनार्थ, व्हील आकार और भार को अनिवार्य उत्पाद मानदण्ड के रूप में उपयोग करने को उचित माना है।

ड.1 चीन जन.गण. हेतु सामान्य मूल्य का निर्धारण

घरेलू उद्योग के विचार

9. घरेलू उद्योग ने निवेदन किया है कि वर्तमान कार्रवाई में वर्तमान जांच के तहत संबद्ध देश एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था है और उसे यूरोपीय आयोग, संयुक्त राज्य तथा यहां तक कि भारत ने भी यही व्यवहार प्रदान किया है। अतः पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैरा 7 और 8 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाना है। तदनुसार, घरेलू उद्योग ने चीन के सामान्य मूल्य के परिकलन के प्रयोजनार्थ, एक उचित प्रतिनिधि देश के रूप में जर्मनी को प्रस्तावित किया है, तथा जांच अवधि के दौरान जर्मनी में संबद्ध वस्तुओं की कीमत के संबंध में कुछेक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश से कीमत के एक विकल्प के रूप में घरेलू उद्योग ने भारत में उत्पादन लागत पर विचार करते हुए, भारत में देय कीमत के रूप में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है, जिसे बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों तथा उचित लाभ को शामिल करते हुए यथासमायोजित किया गया है।

भारत में विधिक प्रावधान

नियमावली के तहत अनुबंध 1 के पैरा 7, जिसे दिनांक 15 जुलाई, 1999 की अधिसूचना सं0 44/99-सी शु (एन टी) द्वारा प्रविष्ट किया गया है, में व्यवस्था है कि:-

7. " गैर-बाजार देशों से आयात के मामले में, उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए भारत में समान उत्पाद के लिए वास्तविक रूप से भुगतान किया गया अथवा भुगतान योग्य, आवश्यकतानुसार पूर्णतया समायोजित कीमत सहित, सामान्य मूल्य का निर्धारण तीसरे देश के बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर अथवा भारत सहित ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहाँ यह संभव नहीं है, या किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। "

बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार (एम ई टी)

दिनांक 04/01/2002 को संशोधित पैरा 8 के अनुबंध 1 में निम्नानुसार निहित है:-

8.(1) "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश शब्द का अर्थ है कि कोई देश जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी लागत अथवा कीमत ढांचे के कारण सिद्धांतों को लागू नहीं करने वाले के रूप में मानते हैं। जिसके कारण ऐसे देश में पण्य वस्तुओं की बिक्रियाँ उप पैराग्राफ (3) में निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार वस्तुओं के सही मूल्य को नहीं दर्शाती है।"

8.(2) यह कहना परिकल्पना होगी कि कोई देश जिसे जांच के पूर्ववर्ती तीन वर्षों के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी अथवा डब्ल्यू टी ओ के किसी सदस्य के सक्षम प्राधिकारी द्वारा पाटनरोधी जांच के प्रयोजनार्थ एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश निर्धारित किया गया अथवा माना गया है, एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

तथापि गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश या ऐसे देश से संबंधित फर्म निर्दिष्ट प्राधिकारी को सूचना तथा साक्ष्य उपलब्ध कराकर इस परिकल्पना को समाप्त कर सकते हैं जो यह साबित करता हो कि ऐसा देश उप पैरा (3) में निर्दिष्ट मानदंड के आधार पर एक गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश नहीं है।

8.(3) "निर्दिष्ट प्राधिकारी प्रत्येक मामले में निम्नलिखित मानदंड पर विचार करेंगे कि क्या:-

"(क) ऐसे देश में कच्ची सामग्रियों, प्रौद्योगिकी लागत और श्रम, उत्पादन, बिक्रियों तथा निवेश सहित कीमतों, लागतों तथा निवेशों के संबंध में संबंधित फर्म का निर्णय आपूर्ति तथा मांग को दर्शाने वाले बाजार संकेतों तथा इस संबंध में किसी विशिष्ट राज्य हस्तक्षेप के बिना होता है और यह कि क्या मुख्य निवेशों की लागतें वास्तविक रूप से बाजार मूल्यों को दर्शाती हैं;

(ख) ऐसे फर्मों की उत्पादन लागतें तथा वित्तीय स्थिति पूर्ववर्ती, गैर बाजार अर्थव्यवस्था प्रणाली से उठाये गये विशिष्ट विरूपणों के अधीन होती है। खासकर ऋणों की प्रतिपूर्ति द्वारा परिसम्पत्तियों के हास, अन्य राइट ऑफ, वस्तु विनिमय व्यापार तथा ऋणों की क्षतिपूर्ति के जरिए तथा भुगतान के संबंध में;

(ग) ऐसी फर्म दिवाला तथा सम्पत्ति कानून के अधीन होती है जो कि फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता तथा स्थायित्व की गारंटी देता है; तथा

(घ) विनिमय दर में परिवर्तन बाजार दर पर किये जाते हैं;

तथापि, जहां इस पैराग्राफ में निर्दिष्ट मानदंड के आधार पर लिखित रूप में पर्याप्त साक्ष्य दर्शाया जाता है कि पाटनरोधी जांच के अधीन एक अथवा ऐसे अधिक फर्मों के लिए बाजार स्थितियां लागू होती हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी पैरा 7 तथा इस पैरा में निर्दिष्ट सिद्धांतों के पैरा 1 से 6 में निर्दिष्ट सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।"

10. चीन के एक निर्यातक/उत्पादक को छोड़कर, अन्य किसी ने प्राधिकारी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है।

आयातक के विचार

11. आयातक, मै0 टाटा मोटर्स लि0 (जिसे इसके पश्चात टी एम एल कहा जाएगा) ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु एक उचित बाजार अर्थव्यवस्था देश के रूप में जर्मनी का चुनाव किए जाने का विरोध इस आधार पर किया है कि संबद्ध देश के विकास के स्तर तथा नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार इस प्रकार के तीसरे देश के चुनाव संबंधी सांविधिक सिद्धांत का उल्लंघन होता है। टी एम एल का यह विचार है कि जर्मनी तथा चीन आर्थिक विकास के स्तर से काफी दूर हैं जो यह संबद्ध उत्पाद के संदर्भ में और भी अधिक है। टी एम एल ने भी इस वैकल्पिक सुझाव का विरोध किया है कि बिक्री, सामान्य तथा प्रशासनिक व्ययों (एस जी ए) तथा लाभ सहित समान उत्पाद की भारत में उत्पादन लागत को सामान्य मूल्य माना जाए और कहा है कि पैरा 7 में यह प्रावधान है कि उचित लाभ मार्जिन हेतु उचित समायोजनों के साथ समान उत्पाद हेतु भारत में किए गए वास्तविक भुगतान अथवा देय कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जाना चाहिए। टी एम एल ने आगे यह कहा है कि जर्मनी को प्रतिनिधि देश के रूप में लेकर किया गया सामान्य मूल्य का निर्धारण अविश्वसनीय है, क्योंकि पहिले का प्रति नग औसत भार स्वीकृत भार से कहीं अधिक था, जिसमें भार, मूल्य के बीच के अंतर अथवा दावा किए गए समायोजनों के आधार को दर्शाया नहीं गया है। इसके अलावा, याचिकाकर्ता की लागतों के आधार पर परिकलित सामान्य मूल्य तथा जर्मनी की कीमतों पर आधारित सामान्य मूल्य के बीच के बड़े अंतर से, एक प्रतिनिधि देश के रूप में जर्मनी की अविश्वसनीयता प्रदर्शित होती है।

12. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने इस संबंध में सभी हितबद्ध पक्षकारों को पत्र भेजे जाने के बावजूद कोई टिप्पणी अथवा समानान्तर देशों के किन्हीं उत्पादकों/निर्यातकों के नाम, जो आंकड़े प्रस्तुत करने के इच्छुक हों, प्रस्तुत नहीं किए हैं। इसके पश्चात प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की याचिका तथा अन्य निवेदनों में अभिज्ञात समान देशों, जर्मनी, ब्राजील तथा तुर्की में संबद्ध देशों के उत्पादकों को उनके देश में संबद्ध वस्तुओं की बिक्री कीमत तथा आंकड़ों के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी को अपेक्षित आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था। तथापि चुने गए समवृत्ति वाले देशों से किसी भी उत्पादक ने अब तक कोई उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है।

(क) सहयोग

13. मै0 झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं0 लि0 नामक चीन के एक उत्पादक/निर्यातक ने जांच अवधि के दौरान अपना परिचय दिया तथा प्रश्नावली में पूछे गए बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे तथा निर्यातक प्रश्नावली में उल्लिखित विभिन्न उपांगों के संबंध में सूचना देकर निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है।

(ख) सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत:

14. मै0 झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं0 लि0 द्वारा दायर उत्तरों के संबंध में यह नोट किया गया है कि निर्यातक के पास राज्य की कोई अंशधारिता नहीं है। इस कंपनी को नवम्बर, 1996 में स्थापित किया गया था और विधिक रूप से एक सामूहिक उद्यम के रूप में पंजीकृत तथा झांगझोऊ जियांगचेंग कलेक्टिव इंडस्ट्री एसोसिएशन द्वारा प्रायोजित किया गया था। जुलाई-अगस्त, 2001 में

इसे एक निजी एकल स्वामित्व वाले उद्यम के रूप में तथा बाद में एक संयुक्त स्टॉक सहकारी उद्यम के रूप में परिवर्तित किया गया, जो तदनन्तर जुलाई, 2003 में एक पूर्णतः लिमिटेड लायाबिलिटी कंपनी के रूप में पुनःसंरचित किया गया। इसकी दो सहायक कंपनियां हैं जो संबद्ध उत्पादक के संघटकों का उत्पादन करती हैं तथा इन सहायक कंपनियों तथा प्रमुख कंपनी के निदेशक मंडल के अध्यक्ष एक हैं। कंपनी का नियंत्रण, 84 % शेयर रखने वाले चीन की राष्ट्रीयता वाले अंशधारक में निहित किया गया था, और उसे संबद्ध देश से कंपनी, श्रम और लेखा कानूनों द्वारा शासित किया जाता था।

15. डब्ल्यू टी ओ में चीन के अधिग्रहण के नयाचार से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि संबद्ध उत्पाद राज्य नियंत्रण के अधीन है, इस्पात उत्पाद विनिर्दिष्ट व्यापार के तहत उत्पादों के अनुबंध में आते हैं; जिसमें अधिग्रहण के तीन वर्षों के भीतर उदारीकरण किया जाना है। निर्यातकों ने दावा किया है कि वस्तुओं का मुक्त निर्यात, किसी कोटे के बिना अनुमत था और किसी बाहरी हस्तक्षेप के बिना ग्राहकों के साथ कीमतों तथा मात्राओं के विषय में मोल-तोल, तथा बाजार एवं उत्पादन लागतों के अनुसार उत्पाद का कीमत निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र है। चीन में इस्पात की कीमतें किसी सरकारी नियंत्रण अथवा प्रशासनिक कीमत-निर्धारण तंत्र के अधीन नहीं हैं। उनका दावा है कि इस्पात के मामले में चीन लागत के संबंध में एक लाभप्रद स्थिति में है क्योंकि वह विश्व का सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है तथा इसके साथ ही उसकी किंचित निम्न गुणवत्ता के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजारों में इसकी कीमतें अपेक्षाकृत कम हैं। परंतु अनुमानतः आर एम बी 3760 प्रति टन अथवा 465 अम.डा. प्रति मी.टन कीमत को अत्यंत कम नहीं माना जा सकता है और उसे बाजार स्थितियों का प्रतिबिम्ब माना जा सकता है। इसके अलावा, वे अल्पकालिक अथवा मौके पर संविदा प्रदान करने के जरिए स्थानीय रूप से विनिर्माण हेतु निविष्टियों की अधिप्राप्ति करते हैं; सब्सिडी के बिना उपयोगिताओं हेतु सामान्य दरों का भुगतान करते हैं तथा निर्यात बिक्रियों पर 17% वैट आय प्राप्त करते हैं। आवश्यक सांविधिक तथा विवेकानुसार संचित निधि अपेक्षाओं की पूर्ति के पश्चात निर्यातों से प्राप्त लाभ को अंशधारकों में वितरित कर दिया जाता है।

16. सामूहिक उद्यम से एकल स्वामित्व में परिवर्तित किए जाने के दौरान कंपनी द्वारा परिसंपत्तियों के मूल्यांकन, निधि का वह स्रोत, जिससे उद्यम में अन्य प्रकृत व्यक्तियों को एकमात्र स्वामी द्वारा पुनर्भुगतान किया गया, संस्था के अंतर्नियमों के तहत एकल स्वामित्व को संयुक्त स्टॉक सहकारी उद्यम में परिवर्तित किया गया तथा उत्पादन प्रक्रिया का विवरण तथा प्रयुक्त कच्ची सामग्री आदि के संबंध में सूचना उपलब्ध कराया जाना अपेक्षित है।

घरेलू उद्योग के विचार

17. घरेलू उद्योग ने निम्नानुसार निवेदन किया है:-

पैरा 8(i) के अनुसार इस प्रश्न कि क्या प्रमुख निविष्टियों की लागतों से बाजार मूल्य प्रदर्शित होते हैं, का यह तात्पर्य है कि यह लागतें, अंतराष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतों के अनुरूप होनी चाहिए। उत्पादक को यह निर्धारित करना होता है कि संबद्ध उत्पाद के उत्पादन हेतु खरीदे गए इस्पात की कीमत जो विनिर्माण लागत के 70-80 प्रतिशत तक होती है - अंतराष्ट्रीय कीमत से तुलनीय है।

(ii) चीन सरकार ने इस्पात उद्योग को कई प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष लाभ प्रदान किए हैं, जिसमें ऋण माफ करने, गैर-निष्पादनकारी ऋणों के संबंध में कोई कार्यवाही न करने, अधिमानी ऋणों, निर्दिष्ट ऋण, तथा आयकर छूट/कमी आदि जैसे कर प्रोत्साहन के अलावा नकद अनुदान, भू-अनुदान, स्वामित्व लाभ का अंतरण जो वाणिज्यिक आधार पर न हो, इस्पात कंपनियों में ऋण को इक्विटी में परिवर्तित करना आदि शामिल है। लक्षित अवसंरचना विकास, कच्ची सामग्री की कीमतों के मनचाहे निर्धारण तथा चीन की मुद्रा रेनमिनबी (आर एम बी) को कायम रखने आदि के जरिए राज्य के हस्तक्षेप का भी संकेत प्राप्त होता है। निर्यातक ने इस आशय का कोई दावा नहीं किया है कि कंपनी द्वारा प्रदत्त इस्पात की कीमतें अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रचलित कीमतों से तुलनीय हैं और इस प्रकार कंपनी को तब तक बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्रदान नहीं किया जा सकता जब तक कि वह यह सिद्ध नहीं करती है कि उसकी निविष्टि संबंधी कीमतों में बाजार मूल्य का पर्याप्त प्रदर्शन होता है।

(iii) निर्यातक ने यह दावा करते हुए इस्पात स्टेज से उत्पादन लागत प्रस्तुत नहीं की है कि उनके द्वारा जिस उत्पादन प्रक्रिया का अनुपालन किया गया उसमें केवल डिस्क, रिम और रिंग को ही संयोजित किया गया था। अतः संपूर्ण उत्पादन प्रक्रिया तथा परिणामी लागत ब्यौरा केवल संयोजन के स्तर तक के लिए प्रस्तुत किए गए हैं। उत्पादन लागत के विवरण में कच्ची सामग्री की लागत कुल लागतों का 95 प्रतिशत दर्शाई गई है, जिससे यह संकेत मिलता है कि ये केवल संयोजन प्रचालनों के लिए थे जिनमें रिम, डिस्क और रिंग को प्रत्यक्षतः निविष्टियां माना गया है।

(iv) जिस उत्पादन प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है उसके संबंध में विरोधाभासी दावे किए गए हैं, जिसमें प्रक्रिया, उत्पादन लागतों, क्षमता परिकलनों, अभिज्ञात कच्ची सामग्रियों तथा निविष्टियों की अधिप्राप्ति के बारे में व्यापारिक निर्णयों के संबंध में भिन्न-भिन्न निवेश तथा सूचना दी गई है।

(v) यह कल्पना करना नामुमकिन है कि 32 मिलियन युआन के निवेश के साथ 210 हजार वर्ग मी. फैक्ट्री क्षेत्र में 2600 कर्मचारियों के साथ 5.5 मिलियन पहियों की उत्पादन क्षमता वाली एक कंपनी, जहां से विश्व के 35 देशों को निर्यात बिक्री की जाती है, केवल संयोजन संबंधी कार्य करती होगी और डिस्क, रिम तथा रिंग का उत्पादन नहीं।

(vi) निर्यातक ने अपनी सहायक अथवा संबद्ध कंपनियों के कार्यकलापों के संबंध में कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई है, जिसे प्रस्तुत करना उस स्थिति में आवश्यक होता है, यदि वे डिस्क, रिम अथवा रिंग का उत्पादन कर रहे हों। अतः निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर अपूर्ण था।

(vii) चूंकि निर्यातक बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे के अपने दावे को स्थापित करने में असफल रहा है और उसने जानबूझ कर तथा स्वेच्छा से अपूर्ण सूचना उपलब्ध कराई है इसलिए प्राधिकारी को इस चरण पर बाजार अर्थव्यवस्था दर्जे के लिए दावे को अनन्तिम रूप से अस्वीकार कर के याचिकाकर्ता द्वारा स्थापित किए गए के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करना चाहिए।

प्राधिकारी द्वारा जांच

18. प्राधिकारी का यह संज्ञान है कि निर्यातक ने संगत तथ्यों के साथ अपने उत्तर में पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं जिनसे वे नियमावली के अनुबंध I के पैरा 8 तथा उनकी कंपनी को बाजार अर्थव्यवस्था का

दर्जा दिए जाने के संबंध में उन्हें भेजी गई गैर- बाजार अर्थव्यवस्था प्रश्नावली में यथाउल्लिखित परिकल्पनाओं का खण्डन करना चाहते हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कम्पनी द्वारा प्रदत्त कच्ची सामग्री अर्थात् एच आर स्टील कॉयल की कीमत का मुद्दा बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार और उसकी उत्पादन लागत के सही निर्धारण दोनों की जांच हेतु महत्वपूर्ण है। ऐसी स्थिति में जहाँ कच्ची सामग्री की कीमतें चीन के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भी प्रचलित बाजार दरों से काफी कम हैं, वहाँ न केवल बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार हेतु महत्वपूर्ण शर्त की पूर्ति नहीं होती है अपितु लागत का भी कम आकलन किया जा सकता है। निर्यातक ने अब तक यह प्रमाणित नहीं किया है कि प्रमुख निविष्टियों की कीमतों में बाजार मूल्य को पर्याप्ततः प्रदर्शित किया गया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने बाजार अर्थव्यवस्था का व्यवहार प्रदान नहीं किया है।

19. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आवेदकों ने एक बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश- जर्मनी में कीमत या परिकलित मूल्य का साक्ष्य उपलब्ध कराया था। चीनी उत्पादकों को गैर बाजार अर्थव्यवस्था प्रदान किए जाने के घरेलू उद्योग के दावे का खण्डन करते समय न तो चीनी उत्पादक, न आयातक और न ही अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने प्रमाणित दावा या बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य के संबंध में कोई प्रमाणित साक्ष्य प्रस्तुत किया। प्राधिकारी द्वारा भेजी गई निर्यातक प्रश्नावली का प्रतिनिधि देश के उत्पादकों/निर्यातकों से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। इन परिस्थितियों में, प्राधिकारी ने अनन्तिम रूप से निर्धारित किया है कि प्रारंभिक जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ उपलब्ध एकमात्र विकल्प समान उत्पाद के लिए उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए उचित रूप से समायोजित भारत में वास्तव में भुगतान की गई अथवा भुगतान- योग्य कीमत पर विचार कर के सामान्य मूल्य का निर्धारण करना है।

20. अतः, प्राधिकारी ने अंतर्राष्ट्रीय कच्ची सामग्री की कीमतों एवं ईष्टतम परिवर्तन लागतों, बिक्री, सामान्य एवं प्रशासनिक खर्चों तथा उचित लाभ को दर्शाने के लिए उचित रूप से समायोजित भारत में उत्पाद लागत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य का परिकलन किया है। प्रमुख कच्ची सामग्री हॉट रॉल्ल्ड स्टील कॉयल है। तथापि, जांच प्रक्रिया के आगे बढ़ने पर प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध I के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे देश की उपयुक्तता की जांच करने का प्रस्ताव करते हैं, यदि उन्हें उनकी उपयुक्त कीमत या परिकलित मूल्य के बारे में सूचना प्राप्त हो।

उत्तर देने वाले निर्यातक तथा अन्य निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का परिकलन करने के लिए प्रणाली

ड.2. निर्यात कीमत

21. प्राधिकारी ने अनन्तिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ पाटन मार्जिन एवं कीमत कटौती की संगणना हेतु सरकारी कीमत को हिसाब में नहीं लिया है क्योंकि सरकारी सांख्यिकी में निहित आंकड़े निर्यातक एवं आयातक द्वारा सूचित आंकड़ों से काफी कम हैं। तदनुसार, निर्यातक द्वारा यथासूचित निर्यात कीमत को संख्या के भार में परिवर्तन हेतु उचित संशोधन के साथ अपनाया गया है। संबद्ध उत्पाद के लिए भारत में भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है। सत्यापन के लंबित रहने तक, भाड़े तथा बैंक प्रभारों जैसे समायोजनों के कारण दावा किए गए कीमत समायोजनों की अनन्तिम रूप से अनुमति दी गई है। भारित औसत निर्यात कीमत *** अमरीकी डॉलर प्रति मी. टन ली गई है और अंतर्देशीय भाड़े तथा बैंक प्रभारों के लिए समायोजन के बाद कारखाना द्वार निर्यात कीमत *** डॉलर प्रति मी. टन बनती है। निश्चयात्मक आधार पर अपना निर्णय लेने के लिए जांच प्रक्रिया के आगे बढ़ने पर प्राधिकारी निर्यातक के उत्तर की और जांच करने का प्रस्ताव करते हैं।

8.3. पाटन मार्जिन

22. उत्पाद के लिए निर्धारित किए गए परिकलित सामान्य मूल्य और भारत औसत निर्यात कीमत के आधार पर सामान्य मूल्य और कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमतों की तुलना कर के प्राधिकारी ने पाटन मार्जिन का परिकलन किया है। इस प्रकार, निर्धारित किया गया भारत औसत समग्र पाटन मार्जिन बहुत अधिक है। अन्य निर्यातकों के लिए न्यूनतम निर्यात कीमत का भारत औसत ले कर पाटन मार्जिन का परिकलन किया गया है। इसे निम्नानुसार दर्शाया गया है :-

कीमत प्रति कि.ग्रा. रु. में	भारत औसत
सहयोगी निर्यातक के लिए पाटन मार्जिन	
परिकलित सामान्य मूल्य	***
निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन %	46.89
अन्य निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन	
निर्यात कीमत	***
पाटन मार्जिन	***
पाटन मार्जिन %	63.01

स्रोत: निर्यातक, डीजीएडी

च. क्षति एवं कारणात्मक संबंध

23. नियमावली के अनुबंध II में यह अपेक्षा की गई है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों का प्रभाव तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों का अनुवर्ती प्रभाव दोनों की वस्तुपरक जांच शामिल होगी। नियम के अनुबंध II (ii) में निम्नानुसार प्रावधान है :-

(ii) " पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत की तुलना में काफी वृद्धि हुई है.....। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा काफी हद तक कीमतों में कमी लाना अथवा कीमत में उस वृद्धि को रोकना है जो कि अन्यथा काफी हद तक बढ़ गई होती। "

नियम में आगे प्रावधान है कि :

(iv) " घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्रियों में प्राकृतिक एवं संभावित कमी, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेश से आय या क्षमता का उपयोग; घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारकों, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभावों, सूचियों, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश बढ़ाने की क्षमता सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी आवश्यक आर्थिक कारकों तथा संकेतकों का मूल्यांकन शामिल होना चाहिए। "

24. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों की मात्रा एवं प्रभाव तथा कीमतों एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है। चूंकि संबद्ध देश से निर्यातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन का निर्धारण किया जा चुका है अतः क्षति की उपस्थिति तथा पाटन एवं क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच करने के लिए क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंध की जांच के प्रयोजनार्थ संबद्ध देश के समग्र निर्यातों को पाटित आयात माना गया है।

आयातक के विचार

25. आयातक का यह मत है कि घरेलू उद्योग को क्षति का दावा गलत था क्योंकि घरेलू बिक्री कीमत गैर क्षतिकारक कीमत से अधिक थी। *** रू. प्रति कि.ग्रा. या *** रू. प्रति सेट की याचिकाकर्ता की लागत पर आधारित परिकलित सामान्य मूल्य भी गैर क्षतिकारक कीमत था क्योंकि उसमें वास्तविक उत्पादन लागत जोड़ 5% लाभ मार्जिन पर विचार किया गया था। जांच अवधि के दौरान आयातक ने घरेलू उद्योग से *** रू. की औसत कीमत पर 7.5-20 विनिर्देशन वाले *** व्हील सेट खरीदे थे जो कि कच्चे माल के लिए बुनियादी सीमाशुल्क के लिए समायोजित गैर क्षतिकारक कीमत पर था। आधार वर्ष 2002-03 की तुलना में जांच अवधि के दौरान 44% अधिक सूचीबद्ध लाभों से क्षति न होने की पुष्टि की गई थी, यद्यपि वर्ष 2004-05 की तुलना में जांच अवधि में लाभ मार्जिन कम था तथापि, गैर-क्षतिकारक कीमत के दृष्टिकोण से वह फिर भी पर्याप्त था। इसके अतिरिक्त, चूंकि निवल बिक्री प्राप्ति गैर क्षतिकारक कीमत के निकट थी इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई थी। इसके अलावा, पर्याप्त पाटन मार्जिन को दर्शाने वाला परिकलित सामान्य मूल्य और कम होगा यदि घरेलू उद्योग की वास्तविक लागतों का सत्यापन तथा सही ढंग से निर्धारण किया जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग ने गैर क्षतिकारक कीमत के समतुल्य अथवा उससे अधिक कीमत प्राप्त की है और इसलिए उसे कोई क्षति नहीं हुई है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

क. पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर प्रभाव आयात आंकड़े

26. गौण स्रोतों (डीजीसीआईएण्डएस) द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना दर्शाती है कि उत्पादों की सूचना सीमाशुल्क वर्गीकरण 8708.7000 तथा 8708.9100 के अंतर्गत दी गई है। चूंकि उत्पाद विवरण मात्र सांकेतिक है अतः मात्रा, मूल्य एवं औसत आयात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ, उनके वर्गीकरण पर विचार किए बिना संबद्ध वस्तु के सभी आयातों को शामिल किया गया है। जांच की शुरुआत करते समय डीजीसीआईएण्डएस से संबद्ध उत्पाद के आयातों के बारे में सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया था। उपलब्ध कराई गई सूचना में केवल सीमाशुल्क वर्गीकरण 9708.7000 शामिल है। उसके विश्लेषण से यह प्रदर्शित होता है कि भारत में इस समय केवल संबद्ध देश से संबद्ध उत्पाद का आयात होता है। जांच अवधि के ब्यौरे निम्नानुसार हैं :-

गौण स्रोतों से आंकड़ों का सारांश			
व्हील आयात, 2005	मात्रा (मी. टन)	मूल्य (लाख रू.)	औसत कीमत (रू./कि.ग्रा.)
डीजीसीआई एंड एस	9245.65	3653.46	39.52
आईबीआईएस	7399.60	2605.67	35.21

स्रोत: डीजीसीआईएस, घरेलू उद्योग

तथापि, घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि इन दोनों गौण स्रोतों ने पाटित आयातों की मात्रा को कम करके बताया है, उनका यह कथन ऑटोमोटिव विनिर्माण सोसाइटी (एसआईएम) द्वारा रिपोर्ट किए गए जांच अवधि में वाहनों के उत्पादन के आंकड़ों पर आधारित है। इस आधार पर आकलित आयात 18405 मी. टन है।

27. निर्यातक तथा आयातक द्वारा प्रस्तुत किए गए आंकड़ों से यह संकेत मिलता है कि आयात मात्रा घरेलू उद्योग द्वारा किए गए आकलन के आस-पास है।

निर्यातक के अनुसार	श्रेणी	2004-05		जांच अवधि	
		सं.	मी. टन*	सं.	मी. टन*
	6.00-16"	0.02	0.02	18.17	18.17
	7.00-20"	0.01	0.01	0.98	0.98
	7.50-20"	16.23	16.23	213.93	213.93
	कुल	16.26	16.26	233.08	233.08
आयातक के अनुसार	16" रिम	-	-	2.50	2.50
	20" रिम	4.14	4.14	97.50	97.50
	कुल	4.14	4.14	100	100

टिप्पणी: * : निर्यातक द्वारा इंगित व्हील के भार के आधार पर निम्नानुसार परिकलित
(क) 6.0- 16" : 20.5 कि.ग्रा.;

(ख) 7.0- 20" : 40 कि.ग्रा.; (ग) 7.5-20 : 47 कि.ग्रा.।

निर्यातक के साथ-साथ आयातक द्वारा सूचित आंकड़ों की तुलना में अधिकारिक सांख्यिकी में दिए गए आंकड़े बहुत कम हैं। अतः प्राधिकारी ने आगे की जांच के लंबित रहने तक निर्यातक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना पर प्रारंभिक जांच परिणामों को आधारित करने को उचित माना है।

मांग का आकलन

28. संबद्ध वस्तु की घरेलू खपत/मांग की गणना के लिए प्राधिकारी ने भारत में कुल आयातों में घरेलू उद्योग तथा अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को जोड़ा। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि आईबीआईएस के आंकड़ों में चुनिंदा पत्तनों पर रिपोर्ट किए गए आयात परन्तु सभी टैरिफ शीर्षों जिनके तहत संबद्ध वस्तु का आयात किया जा रहा है, संबंधी सूचना शामिल है जबकि डीजीसीआईएण्डएस के आयात आंकड़ों में केवल किसी विशेष टैरिफ शीर्ष के लिए संबद्ध वस्तु का उल्लेख है। इसके बावजूद, दोनों स्रोतों ने आयातों की मात्रा को कथित रूप से कम कर के बताया है। चूंकि इसका सत्य निर्यातक तथा आयातक द्वारा दिए गए उत्तरों जिसमें गौण स्रोतों में सूचित किए गए की तुलना में बहुत अधिक आयात दर्शाए गए हैं, से स्पष्ट है, अतः प्राधिकारी ने आगे जांच के लंबित रहने तक अनन्तिम जांच परिणामों के प्रयोजनार्थ संबद्ध वस्तु की मात्रा एवं कीमत संबंधी आयात आंकड़ों के प्रयोजनार्थ निर्यातक के आंकड़ों पर विश्वास किया है। प्राधिकारी द्वारा विचार किए गए आयात आंकड़ों की एक प्रति सभी हितबद्ध पक्षकारों के लाभार्थ सार्वजनिक फाइल में भी रखी गई है।

मापदण्ड: (मी. टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	52702	70757	88560	80818
आयात- संबद्ध देश			***	***
मांग	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	171	191

स्रोत: घरेलू उद्योग, निर्यातक

तालिका से अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित हुई है और क्षति अवधि के दौरान उसमें 91% वृद्धि हुई है।

आयातों की मात्रा तथा बाजार हिस्सा

29. पाटित आयातों की मात्रा के सम्बन्ध में यह जांच की गई थी कि क्या निरपेक्षतः अथवा उत्पादन या भारत में खपत की तुलना में पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

मापदण्ड (मी. टन में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
कुल आयात मी. टन			***	***
चीन से आयात			***	***
सूचीबद्ध			100	1489
चीनी आयातों का बाजार हिस्सा (%)			100	100
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री	52702	70757	88560	80818
मांग	***	***	***	***
मांग में चीन से आयातों का हिस्सा			1.49%	19.75%
मांग में घरेलू उद्योग का % हिस्सा	100%	100%	98.51%	80.25%
घरेलू उद्योग का उत्पादन	***	***	***	***
उत्पादन की तुलना में चीन से आयात			1.50%	24.44%

स्रोत: घरेलू उद्योग, निर्यातक

30. आयात आंकड़ों की जांच करने पर प्राधिकारी ने नोट किया कि संबद्ध देश से आयात निरपेक्ष रूप से 2004-05 में महज *** मी. टन से जांच अवधि के दौरान बढ़कर *** मी. टन हो गए। इसके अलावा, घरेलू मांग के सम्बन्ध में संबद्ध देश से आयात 2004-05 में 1.49% से बढ़कर जांच अवधि में 19.75% हो गए जबकि घरेलू उद्योग के उत्पादन के सम्बन्ध में वे क्रमशः 1.50% से बढ़कर 24.44% हो गए। इसके अतिरिक्त, जहां मांग में चीनी आयातों का हिस्सा 2005 में 19.75% तक बढ़ा वहीं घरेलू उद्योग का हिस्सा 2003-04 में 100% से गिरकर जांच अवधि में 80.25% हो गया। इसके मद्देनजर तथा भारत में कोई दूसरा घरेलू उत्पादक न होने के कारण प्राधिकारी का अनन्तिम रूप से यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देश से पाटित आयात प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव दर्शाते हैं।

31. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट तब भी देखी गई जब टीएमएल जो कि संबद्ध उत्पाद का एक प्रमुख घरेलू उपभोक्ता भी है, द्वारा उत्पाद की तिमाही-वार खरीद पर गौर किया गया। घरेलू उद्योग से खरीद निम्नानुसार रही है :-

टीएमएल (आयातक) द्वारा घरेलू उद्योग से खरीद						
तिमाही	20" रिम			16" रिम		
	मात्रा (000)	मूल्य (लाख रु.)	दर	मात्रा (सूचकांक)	मूल्य (लाख रु.)	दर
जुलाई- सित., 04	238	***	***	67	***	***
अक्तू.- दिस., 04	312	***	***	83	***	***
जन.- मार्च, 05	310	***	***	94	***	***
अप्रैल- जून, 05	197	***	***	72	***	***
जुलाई- सित., 05	121	***	***	76	***	***
अक्तू.-दिस., 05	151	***	***	70	***	***
निर्यातक के अनुसार भारत को निर्यात संबंधी आंकड़े						
	20" रिम निर्यात (000)		16" रिम निर्यात (सूचीकृत)			
जन.- मार्च, 05	14.62		0.02			
अप्रैल- जून, 05	53.13		---			
जुलाई- सित., 05	76.68		5.07			
अक्तू.- दिस., 05	70.49		13.08			

स्रोत: आयातक, निर्यातक

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग से टीएमएल द्वारा 20" रिम पहियों की खरीद जो 2004 की चौथी तिमाही में लगभग *** नगों की थी 2005 की दूसरी तिमाही में गिरकर *** नग रह गई जबकि 16" रिम के मामले में 2005 की पहली तिमाही में टीएमएल की लगभग *** नगों की खरीद में 2005 की दूसरी तिमाही में सीधे गिरावट आई। बिक्री में गिरावट के बावजूद उत्पाद की इकाई दरों में मामूली वृद्धि हुई। प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि आयात 2005 की पहली तिमाही के संतुलित *** नगों से बढ़कर तीसरी तिमाही में लगभग *** नगों की ओर अग्रसर होते हुए 16" रिम की तुलना में 20" रिमों के खण्ड में ज्यादा थे।

ख. आयातों का कीमत संबंधी प्रभाव

33. इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ, घरेलू उद्योग के उत्पादन की भारित औसत लागत, भारित औसत निवल बिक्री वसूली (एनएसआर) तथा क्षतिरहित कीमत (एनआईपी) की संबद्ध देश से आयातों की पहुंच लागत के साथ तुलना की गई ताकि यह जांचा जा सके कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों से कीमतें मंद हुई हैं अथवा कीमत वृद्धि में रूकावट आई है जो कि अन्यथा अत्यधिक बढ़ गई होती।

मापदण्ड (रु.प्रति कि.ग्रा.)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पहुंच मूल्य			38.09	39.71
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली	***	***	***	***
उत्पादन की लागत	***	***	***	***
कीमत कटौती*			***	***
कीमत कटौती %			18	21

* एनएसआर घटा आयातों का पहुंच मूल्य

स्रोत: घरेलू उद्योग, आयातक

34. कीमत कटौती का निर्धारण, पाटित आयातों के पहुँच मूल्य की भारत औसत निवल बिक्री वसूली (कारखाना द्वार) के साथ तुलना करके किया गया है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली का निर्धारण करते समय छूट, रियायत तथा प्रस्तावित कमीशन एवं प्रदत्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्कों को छोड़ दिया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देश से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू की निवल बिक्री वसूली से काफी कम रहा है जिसके परिणामस्वरूप उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है।

कीमत न्यूनीकरण

35. उल्लेखनीय कीमत कटौती के अतिरिक्त पाटित आयातों से भारतीय बाजार में कीमत में अत्यधिक न्यूनीकरण हुआ है जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है :-

मापदण्ड (रु./ कि.ग्रा.)	2002-03	2003-04	2004-05	जाँच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत	***	***	***	***
वर्ष- दर- वर्ष परिवर्तन	100	101	115	128
निवल बिक्री प्राप्ति	***	***	***	***
वर्ष- दर- वर्ष परिवर्तन	100	104	120	130
चीनी आयातों का पहुँच मूल्य			***	***
वर्ष- दर- वर्ष परिवर्तन			100	104

स्रोत: घरेलू उद्योग, आयातक

घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि चूंकि निविष्टि लागत में वृद्धि हो रही थी इसलिए घरेलू उद्योग कीमत में वृद्धि करने से वंचित हुआ क्योंकि आयातों से उनकी कीमतों में ह्रास हो रहा था। इसके अलावा, जाँच अवधि में घरेलू उद्योग के लिए अनंतिम क्षति रहित कीमत *** रु./कि.ग्रा. थी जिसमें से पहुँच मूल्य 39.71 रु./कि.ग्रा. का था। प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग ने अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री होने से घाटा उठाया।

घरेलू उद्योग की स्थिति : प्रारंभिक टिप्पणियाँ

36. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जाँच करने के लिए प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियमावली के अनुबंध II (iv) के अनुसरण में उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री मात्रा, स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की मात्रा तथा मार्जिन आदि जैसे ऐसे संकेतकों पर गौर किया है जिनका उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। यह नोट किया जाता है कि कल्याणी लेमर्ज लि. तथा व्हील्स इंडिया लि. जिनका हिस्सा कुल भारतीय उत्पादन में 100% है, ने पाटनरोधी शुल्क लगाने की याचिका संयुक्त रूप से दायर की है। इसलिए याचिका अर्हता को पूरा करती है तथा याचिकाकर्ता नियमावली के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग का संघटक है। इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियमावली के नियम II के तहत यथानिर्दिष्ट घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जाँच की है।

37. घरेलू उद्योग ने उल्लेख किया है कि पहियों जैसे उत्पाद किसी वाहन के लिए संकटापन्न सुरक्षा मद हैं तथा विकास एवं उत्पादन के लिए इसमें लगभग 6-12 माह का समय लगता है। इसके लिए प्रारंभिक डिजाइन, उपभोक्ता का अनुमोदन, दबाव विश्लेषण का परीक्षण, टूलिंग विकास तथा अपने परिसर में परीक्षण के साथ-साथ सत्यापन प्राधिकारियों तथा उपभोक्ताओं द्वारा परीक्षण अपेक्षित होता है। इसलिए आयातों के कारण हुए व्यवसाय के घाटे की तुरंत प्रतिपूर्ति अल्प समय में व्यवहार्य नहीं है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग

ने इस समझ के साथ क्षमताएं स्थापित की हैं कि अधिकांश बिक्री घरेलू उत्पादकों को की जाएंगी। यद्यपि सभी उत्पादों के लिए बाजार विकास एक सतत प्रक्रिया है इसलिए निर्यात बाजार में इसकी सीमित मांग को देखते हुए संबद्ध उत्पाद के लिए वैकल्पिक अवसरों को देखना व्यवहार्य नहीं था। चीनी उत्पादकों द्वारा हुए पाटन से घरेलू उद्योग के प्रयासों को अत्यधिक झटका लगा है।

बिक्री की मात्रा

38. घरेलू उद्योग (डीआई) की बिक्री की मात्रा निम्नानुसार रही है :-

मात्रा मी. टन में	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
डीआई- घरेलू बिक्री	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	168	153
संबद्ध देशों से आयात			***	***
सूचीबद्ध (2004-05 = 100)			100	1489
घरेलू मांग	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	171	191
मांग में चीन जन. गण. का हिस्सा (%)			1.98	19.75
मांग में डीआई का बाजार हिस्सा (%)	100	100	98.51	80.25

स्रोत: घरेलू उद्योग, निर्यातक

प्राधिकारी ने नोट किया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा 2004-05 तक बढ़ी है तथा इसके बाद जांच अवधि में घटी है जबकि सहवर्ती रूप से भारत में संबद्ध वस्तुओं की मांग में स्थिर वृद्धि हुई है। तथापि, घरेलू उद्योग इस बढ़ी हुई मांग का लाभ उठाने में समर्थ नहीं रहा है क्योंकि किसी घरेलू उत्पादक की अनुपस्थिति में इसका बाजार हिस्सा संबद्ध देश से आयातों को चला गया। इसके अलावा, प्राधिकारी ने इस तथ्य को संज्ञान में लिया है कि चूंकि संबद्ध उत्पाद विश्व में बहुत कम देशों में प्रयुक्त किया जा रहा है अतः इसकी मांग सीमित है इसलिए आबद्ध क्षमताएं प्रभावी ढंग से पुनः परिनियोजित नहीं की जा सकतीं, न ही पाटित आयातों द्वारा उत्पन्न किए गए अंतराल को निर्यातों द्वारा पाटा जा सकता है।

लाभ

39. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता की स्थिति निम्नानुसार है :

मापदण्ड (लाख रु. में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
लाभ/हानि (रु./कि.ग्रा.)**	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	72	(45)
घरेलू बिक्री पर लाभ/हानि	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	121	(69)
ब्याज लाख रु.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	62	74	99
पीबीआईटी लाख रु.	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	183	469	161

** बिक्री कीमत- बिक्री लागत

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी का यह मत है कि यद्यपि घरेलू उद्योग के निष्पादन में 2004-05 तक सुधार हुआ है तथापि, इसमें जांच अवधि में तीव्र गिरावट आई। जांच अवधि में संबद्ध उत्पाद के गहन पाटन से घरेलू उद्योग के वित्तीय मानदण्डों पर प्रभाव पड़ा।

प्राधिकारी ने वर्ष 2002-03 और 2003-04 में घरेलू उद्योग द्वारा कम लाभ के कारणों की जांच की। यह पाया गया कि कल्याणी लेमर्ज ने बेहतर गुणवत्ता के उत्पाद का उत्पादन करने वाली आधुनिकी प्रौद्योगिकी/प्रक्रिया के साथ वर्ष 1997-98 में वाणिज्यिक उत्पादन शुरू किया जबकि व्हील्स इंडिया, पाडी के पास पुराना विंटेज संयंत्र (1962) था। घरेलू उद्योग को वर्ष 2002-03 में ईष्टतम से कम क्षमता उपयोग के साथ कल्याणी लेमर्ज के मामले में अपेक्षाकृत ब्याज के उच्च प्रभाव तथा मूल्य ह्रास संबंधी व्यय के कारण घाटा हुआ। वर्ष 2003-04 और 2004-05 में क्षमता उपयोग में सुधार होने के कारण घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वृद्धि हुई और घरेलू उद्योग ने वर्ष 2004-05 में लाभ की सूचना दी। तथापि, लाभ में एक बार फिर कमी आई और घरेलू उद्योग को जांच अवधि में वित्तीय घाटा हुआ।

उत्पादकता

40. घरेलू उद्योग की उत्पादकता निम्नांकित सारणी में दी गई है। प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग की उत्पादकता तथा प्रति कर्मचारी बिक्री में 2004-05 तक वृद्धि हो रही थी जिसके पश्चात इन दोनों मानदण्डों में गिरावट आई। अतः जांच अवधि में क्षति जिसे पाटित आयातों के कारण माना जा सकता है, के साक्ष्य मिलते हैं, यद्यपि रोजगार 2003-04 से पर्याप्ततः स्थिर रहा है।

मापदण्ड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
डीआई की बिक्रियां (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	137	191	209
कर्मचारियों (पीयूसी) की संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	121	117	122
उत्पादन (एमटी)	***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	107	146	129
घरेलू बिक्रियां (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	140	201	197
बिक्री प्रति कर्मचारी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	112	169	158

स्रोत: घरेलू उद्योग

निवेश पर प्राप्ति

41. निवेश पर प्राप्ति (ब्याज पूर्व लाभ) उसी प्रवृत्ति को दर्शाती है जैसाकि लाभ से प्रदर्शित होती है और जो निम्न सारणी से स्पष्ट है।

मापदण्ड (लाख रुपए)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पीबीआईटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	183	469	161

लगाई गई पूंजी (एनएफए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	109	142	142
लगाई गई पूंजी पर प्राप्ति (एनएफए) (%)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	168	331	113

स्रोत: घरेलू उद्योग

उपरोक्त तालिका से यह नोट किया गया है कि वर्ष 2004-05 के दौरान लाभों में लगभग *** रूपए की वृद्धि हुई है लेकिन जांच अवधि में यह घटकर *** रूपए से भी कम रह गए हैं। वर्ष 2004-05 तक लगाई गई पूंजी पर प्राप्ति में सुधार आया था लेकिन जांच अवधि में काफी कमी आई थी।

क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग

42. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग निम्नानुसार रहा है:-

मापदण्ड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
क्षमता सं. में ('000)	2380	2380	2724	2724
सूचीबद्ध	100	100	114	114
उत्पादन संख्या में ('000)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	131	162	157
क्षमता उपयोग	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	131	142	137
घरेलू मांग (एमटी)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	134	171	191

स्रोत: घरेलू उद्योग

घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि मांग को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2004-2005 में उसने अपनी स्थापित क्षमता में वृद्धि की थी लेकिन जांच अवधि में चूंकि उत्पादन में कमी आई थी इसलिए क्षमता उपयोग में भी कमी आई। तथापि मांग में सतत वृद्धि हो रही है लेकिन मांग में वृद्धि को पूरा आयात बढ़ाकर किया गया है न कि घरेलू उद्योग के उत्पादन को बढ़ाकर।

43. घरेलू उद्योग ने आगे निम्नानुसार प्रस्तुत किया है :-

- यद्यपि वैं विकल्पित बाजारों की खोज कर रहे थे, नए बाजारों की विकास संबंधी प्रक्रिया विस्तृत थी एवं समय व्ययित थी और यह भी कि घरेलू बाजार व्यवसाय से जो हानि हुई थी उसे पूरा कर पाना मुश्किल था।
- हाल ही में केवल एक निर्यातक टीएमएल ने संबद्ध देश से आयात करना शुरू किया है लेकिन इस प्रवृत्ति के जारी रहने से अन्य निर्यातक भी इसका अनुसरण करेंगे। इन परिस्थितियों में उद्योग को उत्पाद के उत्पादन के लिए अपनी क्षमताओं को बंद करना होगा। चीन के एक एकल निर्यातक के पास समूची भारतीय बाजार मांग को पूरा करने की क्षमता है और संबद्ध देश में इस उत्पाद के अधिकांशतः 70 ज्ञात उत्पादनकर्ता होने की रिपोर्ट है।
- संबद्ध उत्पाद के लिए संघटित उत्पादक लाइनों की गैर-उपयोगी क्षमता को पुनर्स्थापित करने हेतु घरेलू उद्योग द्वारा एक प्रयास किया गया है ताकि लाभ पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले अन्य उत्पादों के लिए उपकरणों का विनिर्माण किया जा सके।

- (iv) वर्ष 2004-2005 में आयातकों के संकेतकों के आधार पर क्षमता विस्तार से आयातों का सहारा लेने के कारण कोई उपयोगिता नहीं रही है।

घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक

44. संबद्ध देश से हुए आयातों के परिणामस्वरूप भारतीय बाजार में कीमतों में कटौती एवं कम कीमत पर बिक्रियां हुई हैं। संबद्ध देश से हुए आयातों की संपूर्ण रूप में पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से पर्याप्त रूप से कम है। आयातों की पहुँच कीमत में कमी की वजह से कीमत ह्रास के जरिए घरेलू उद्योग प्रभावित हुआ प्रतीत होता है।

पाटन मार्जिन की मात्रा

45. संबद्ध देश से उत्पाद के आयात हेतु पाटन मार्जिन की गणना पैरा 22 में की गई है और उसे काफी अधिक पाया गया है।

भण्डार सूची

46. घरेलू उद्योग के पास भंडार सूचियों की स्थिति निम्नानुसार रही है :-

मानदण्ड (एमटी में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
भण्डार सूचियों का औसत स्टॉक	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	124	116	173
बिक्री मात्रा	***	***	***	***

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा में वर्ष 2004-2005 तक वृद्धि होने के बाद जांच अवधि में गिरावट आई है। भण्डार सूचियों का प्रतिशत बिक्री की तुलना में अत्यंत कम बना रहा क्योंकि उत्पाद आर्डर के मुताबिक तैयार किया गया तथा घरेलू उद्योग ने कार्यशील पूंजी को अवरुद्ध होने से बचाने का सावधानीपूर्वक प्रयास किया। आर्डर के अनुसार तैयार किए गए उत्पादन के बारे में उद्योग के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए क्षति विश्लेषण हेतु इस प्रतिशत पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

नकदी प्रवाह और नकदी लाभ

47. घरेलू उद्योग के सभी संघटक बहु-उत्पाद कम्पनियां हैं; अतः समूची कम्पनी के नकदी प्रवाह की जांच क्षति के प्रयोजनार्थ उचित नहीं हो सकती है। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के नकदी प्रवाह की स्थिति की जांच की है जिसे निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

मानदण्ड (लाख रुपये में)	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पीबीटी	***	***	***	***
सूचीबद्ध	(100)	(2)	121	(69)
ह्रास	***	***	***	***
नकद लाभ	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	221	374	184

स्रोत: घरेलू उद्योग

उपर्युक्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि घरेलू उद्योग के नकद लाभ की स्थिति जिसमें पूर्व में सुधार हो रहा है जांच अवधि के दौरान खराब हो रही है।

रोजगार

48. घरेलू उद्योग के रोजगार का स्तर निम्नानुसार रहा है :-

मानदण्ड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
कर्मचारियों संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	121	117	122
मजदूरी (लाख रुपए)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	118	122	138

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने नोट किया कि वर्ष 2003-2004 से घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर स्थिर रहा है। घरेलू उद्योग बहु-उत्पाद कम्पनियां होने के कारण इनके रोजगार का स्तर क्षति का कोई निर्णायक संकेतक नहीं हो सकता है। घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि यद्यपि पाटन का विकृतिकारी प्रभाव अब तक दृष्टिगोचर नहीं होता है तथापि सतत पाटन होने से पर्याप्त प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। घरेलू उद्योग के एक घटक को संबद्ध उत्पाद के उत्पादन से हटाकर अपने कर्मचारियों का दूसरे उत्पादों में लगाना पड़ा था।

मजदूरी एवं पूंजी जुटाने की क्षमता

49. घरेलू उद्योग की मजदूरी निम्नानुसार रही है :-

मानदण्ड	2002-03	2003-04	2004-05	जांच अवधि
पीयूसी के लिए मजदूरी (लाख रु. में)	***	***	***	***
सूचीबद्ध	100	118	122	138
उत्पादन (मी. टन)	***	***	***	***
मजदूरी/उत्पादन यूनिट	***	***	***	***

स्रोत: घरेलू उद्योग

प्राधिकारी ने नोट किया कि घरेलू उद्योग की मजदूरी में समग्र रूप में वृद्धि हुई है। साथ ही साथ घरेलू उत्पादन में भी वृद्धि हुई है जिसके परिणामस्वरूप उत्पादन की प्रति यूनिट मजदूरी में कमी आई है। अतः यह मापदण्ड घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण रही है। इसके अलावा, इस बात की पुष्टि करने के लिए कि घरेलू उद्योग को पूंजी जुटाने की क्षमता के बारे में समस्याएं हो रही हैं, निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

वृद्धि

50. वृद्धि के विभिन्न मापदण्डों की स्थिति निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

वृद्धि % में	2003-04	2004-05	जांच अवधि
1. बिक्री मात्रा	34.26	25.16	(8.74)
2. इकाई बिक्री कीमत	3.92	15.18	7.38
3. उत्पादन लागत	1.40	13.37	10.01
4. उत्पादन	29.40	32.89	(8.50)
5. पीबीआईटी	83.08	156.35	(65.74)
6. नकद लाभ	120.68	69.60	(50.91)
7. बाजार हिस्सा		(1.49)	(19.75)
8. आरओआई	1.14	2.75	(3.67)

स्रोत: घरेलू उद्योग

उपर्युक्त तालिका से यह पता चलता है कि क्षति संबंधी अधिकांश मानदण्ड क्षति अवधि के दौरान प्रतिकूलतः प्रभावित हो रहे हैं और इनमें ऋणात्मक वृद्धि प्रदर्शित हो रही है।

- (i) उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता उपयोग, उत्पादकता, बाजार हिस्सा, लाभ, निवेश पर आय, नकदी प्रवाह, वृद्धि आदि के संबंध में घरेलू उद्योग का निष्पादन वर्ष 2004-2005 तक सुघरने के बाद जांच अवधि में विकृत हो गया है।
- (ii) आयातों से कीमतों में भारी कटौती हुई है। घरेलू उद्योग को कीमत ह्रास और कम कीमत पर बिक्री का सामना करना पड़ा है।

क्षति का खतरा

51. इस संबंध में नियमावली के अनुबंध II में निम्नानुसार उपबंध है :-

"वास्तविक क्षति के खतरे का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा न कि मात्र आरोप, अनुमान या परोक्ष संभावना पर। परिस्थितियों में ऐसा परिवर्तन स्पष्ट रूप से पूर्वानुमानित और आसन्नवर्ती होना चाहिए जिसके तहत ऐसी स्थिति उत्पन्न होगी जिसमें पाटन से क्षति पहुँचेगी। वास्तविक क्षति के खतरे की मौजूदगी के बारे में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों तथा निम्नलिखित पर विचार करेंगे;

(क) "भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की पर्याप्त दर जिससे अत्यधिक संवर्धित आयात की संभावना का पता चलता हो;

(ख) "निर्यातक की मुक्त रूप से निपटान योग्य पर्याप्त क्षमता अथवा इसकी क्षमता में आसन्नवर्ती, पर्याप्त वृद्धि जिससे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य निर्यात बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार को संवर्धित पाटित निर्यात की भारी संभावना हो;"

(ग) "क्या निर्यात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं जिनका घरेलू कीमतों पर पर्याप्त ह्रासकारी या न्यूनकारी प्रभाव पड़ेगा या जिससे और अधिक आयात करने की मांग में वृद्धि होने की संभावना बनेगी;"

(घ) "जांच की जा रही वस्तु की भण्डारसूची;" ।

घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि संबद्ध देश से उत्पाद के लगातार आयात से उसे निम्नलिखित तरीको से वास्तविक क्षति का खतरा है :-

- (i) आयातों में समग्र रूप से वृद्धि से उनके बाजार हिस्से में गिरावट आई है ।
- (ii) आयातों में संभावित वृद्धि और अधिक है क्योंकि चीनी निर्यातकों की कीमतें कम है । विदेशी निर्यातकों को दिए गए आर्डरों में वृद्धि हुई है ।
- (iii) उत्पाद की माँग में संगत रूप से वृद्धि हुई है और चूंकि यह तुरंत उपलब्ध नहीं है इसलिए आपूर्ति हेतु आर्डर काफी पहले देने होते हैं ।
- (iv) भारी कीमत कटौती से उपभोक्ता विदेशी उत्पादकों से होने वाली आपूर्ति में वृद्धि करने के लिए प्रेरित होंगे या घरेलू उद्योग कीमतें घटाने के लिए मजबूर होंगे ।
- (v) अपने देश में चीनी निर्यातकों द्वारा सृजित क्षमता घरेलू बाजार माँग से अधिक है ।

छ. क्षति संबंधी निष्कर्ष

52. संबद्ध देश से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप से और भारत में संबद्ध वस्तुओं की कुल माँग की दृष्टि से भारी वृद्धि हुई है । इन आयातों में वर्ष 2002-2003 से जाँच अवधि के बीच काफी वृद्धि हुई है और पाटित आयातों के भारी कीमत दमनकारी प्रभाव के परिणामस्वरूप कीमत में ह्रास तथा कीमत कटौती हुई थी । वस्तुतः घरेलू उद्योग की कीमतों में कमी संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण हुई है । संबद्ध देश से जाँच अवधि के लिए कटौती मार्जिन का निर्धारण किया गया है और उसे अधिक माना गया है । यद्यपि क्षति अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में समग्र रूप से वृद्धि हुई है, तथापि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भारी गिरावट आई है । जाँच अवधि में मापदंडों के संबंध में इष्टतम से कम वृद्धि जैसे उत्पादन (माँग में वृद्धि से लगभग 30% कम वृद्धि) क्षमता उपयोग (इष्टतम से कम), जाँच अवधि में लाभ में गिरावट, माँग में बाजार हिस्से में कमी (19.75%), सकारात्मक कीमत कटौती, लगाई गई पूंजी पर आय की निम्नस्तर, भारी पाटन मार्जिन, अनेक मापदंडों के संबंध में ऋणात्मक वृद्धि से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के निष्पादन में भारी विकृति आई है । रोजगार तथा मजदूरी जैसे मापदंडों से क्षति प्रदर्शित नहीं होती है । उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

ज. कारणात्मक संबंध

53. घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण संबंधी अपने निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए तथा पाटनरोधी कशर के अनुच्छेद 3.5 के अनुसार और या संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के नियम 11 के अंतर्गत अनुबंध II के पैरा (V) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभावों और घरेलू उद्योग की स्थिति पर उनके परिणामों की जाँच की है । पाटित आयातों से इतर ज्ञात कारकों जिनसे घरेलू उद्योग को उसी समय क्षति हो सकती थी, की भी यह सुनिश्चित करने के लिए जाँच की गई थी कि इन अन्य कारकों द्वारा हुई संभव क्षति के लिए पाटित आयातों को जिम्मेदार न ठहराया जाए ।

54. (i) पाटित आयातों का प्रभाव

(क) पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में काफी गिरावट आई है। संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में हुई कमी के कारण घरेलू उद्योग बाजार में माँग में हुई वृद्धि के अनुसार बिक्रियों में वृद्धि नहीं कर सका है। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ उस मात्रा तक नहीं बढ़ी है कि घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का इष्टतम ढंग से उपयोग कर पाता। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी के कारण घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री और क्षमता उपयोग में वृद्धि पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

(ख) आयातों से हुई भारी कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग अपनी निविष्टियों की लागत में हुई वृद्धि की मात्रा की तुलना में अपनी कीमतें नहीं बढ़ा पाया है। परिणामस्वरूप लागतार सुधार होने के बाद घरेलू उद्योग के लाम, नकदी प्रवाह और निवेशों पर आय की स्थिति खराब हुई है। यद्यपि, घरेलू उद्योग वर्ष 2002-2003 और 2004-2005 में कीमतों में वृद्धि करने में समर्थ रहा था तथापि जाँच अवधि के दौरान पाटित आयातों जिसने उन्हें आवश्यक कीमत वृद्धि करने से रोका है के कारण उसका निष्पादन खराब रहा है।

55. (ii) अन्य कारकों का प्रभाव

(ग) माँग में संकुचन या उपभोग की प्रवृत्ति में परिवर्तन

प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान समग्र माँग में कोई कमी नहीं हुई है। इसके विपरीत क्षति अवधि के दौरान समग्र माँग में वृद्धि हुई है। प्राधिकारी अनंतिम रूप से इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उपभोग की प्रवृत्ति में कोई खास बदलाव नहीं आया है।

(घ) पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा एवं कीमतें।

उपलब्ध सूचना के अनुसार, संबद्ध देश से इतर देशों के मूल के संबंधित उत्पाद की कुल आयात मात्रा शून्य है और इसलिए इन्हें घरेलू उद्योग पर प्रभाव डालने वाला नहीं माना गया है।

(ङ.) व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा

प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तु के एक ही बाजार में संबद्ध देश से पाटित आयात घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं से सीधे प्रतिस्पर्धा करते हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि आयातित उत्पाद की बिक्री घरेलू रूप से उत्पादित संबद्ध वस्तु के समान वाणिज्यिक ग्रेडों और विनिर्देशनों की माँग को पूरा करने के लिए की जाती है और आयातित संबद्ध वस्तु और घरेलू रूप से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं और इनका उपयोग समान अनुप्रयोगों/अंतिम प्रयोगों के लिए किया जाता है।

(च) प्रौद्योगिकी में विकास, घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन और उत्पादकता

याचिकाकर्ता के रिकार्डों की जाँच के आधार पर, प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी में विकास, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का संगत कारक नहीं रहा है।

घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के संबंध में, प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा कुछ निर्यात किए गए हैं तथापि ये घरेलू उद्योग की कुल बिक्री का काफी छोटा हिस्सा है। यह भी नोट किया जाता है कि विभिन्न आर्थिक संकेतकों के संबंध में कार्य निष्पादन का निर्धारण केवल घरेलू बिक्री के संदर्भ में किया गया है। इस प्रकार प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई वास्तविक क्षति घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन के परिणामस्वरूप नहीं हो सकती है।

जहाँ तक उत्पादकता में सुधार का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन अवधि के दौरान उत्पादकता के मापदंडों में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उत्पादन की दृष्टि से क्षति अवधि के दौरान कुछ सुधार हुआ है। जाँच के आधार पर प्राधिकारी अनंतिम रूप से यह मानते हैं कि संगत उत्पादकता घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं है।

56. कारण निर्धारित करने संबंधी निष्कर्ष

पाटित आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में काफी गिरावट आई है। यह भी देखा गया है कि संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि के परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी के कारण घरेलू उद्योग अपनी बिक्रियों को बाजार में माँग में हुई वृद्धि के अनुरूप नहीं बढ़ा पाया है। जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ उस सीमा तक नहीं बढ़ पाईं जिनसे वह अपनी क्षमता का इष्टतम ढंग से उपयोग कर पाता। इसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग की वृद्धि पर घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में कमी के परिणामस्वरूप बुरा प्रभाव पड़ा है। पाटित आयातों के कारण हुई भारी कीमत कटौती के कारण घरेलू उद्योग निविष्टियों की लागत में हुई वृद्धि की मात्रा के अनुरूप अपनी कीमतों में वृद्धि नहीं कर पाया है। परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग के लाभों, नकदी प्रवाह और निवेशों पर आय की स्थिति में संगत सुधार के पश्चात जाँच अवधि में विकृति हुई है। भारी कीमत कटौती और पाटित आयातों की मात्रा में काफी वृद्धि से लाभों, नकदी प्रवाह, निवेशों पर आय की दृष्टि से घरेलू उद्योग के निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है जिन मापदंडों में वर्ष 2004-2005 में पर्याप्त सुधार होने के बाद जाँच अवधि के दौरान विकृति हुई है।

57. अतः प्राधिकारी का अनंतिम रूप से यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देश के मूल के पाटित आयातों से पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 और पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

क्षति मार्जिन की मात्रा

58. प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक द्वारा प्रस्तुत कीमत संबंधी आंकड़ों और डीजीसीआई एंड एस से उपलब्ध आयात संबंधी आंकड़ों में काफी अंतर है। इनके मिलान और सत्यापन के अधीन रहते हुए अनंतिम क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातक की आयात कीमत संबंधी आंकड़ों का उपयोग उत्तरदाता निर्यातक से संबद्ध वस्तु की पहुँच मूल्य के निर्धारण हेतु किया गया है। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन की गणना हेतु अनंतिम रूप से निर्धारित पहुँच मूल्य के साथ की गई है। इसे नीचे दर्शाया गया है :-

क्षति मार्जिन की गणना (रूपए में)			
क्षति रहित कीमत	पहुँच मूल्य	क्षति मार्जिन	क्षति मार्जिन %
***	39.71	***	35.28
***	37.45	***	43.44

भारतीय उद्योग का हित

59. पाटनरोधी शुल्क लगाने का उद्देश्य सामान्य तौर पर ऐसे पाटन को समाप्त करना है जिससे भारतीय उद्योग को क्षति हो रही है तथा भारतीय बाजार में ऐसी खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की पुनः स्थिति लाना है जोकि देश के सामान्य हित में है। प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से संबद्ध वस्तुओं के उपयोग से विनिर्मित उत्पादों के कीमत स्तर प्रभावित होंगे और परिणामस्वरूप इन उत्पादों की तुलनात्मक प्रतिस्पर्धात्मकता पर प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु पाटनरोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों को लागू करने से पाटन द्वारा प्राप्त हुए अनुचित लाभ समाप्त होंगे और भारतीय उद्योग का ह्रास रुकेगा। इस से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी प्रकार कम नहीं होंगे और इस प्रकार उपभोक्ताओं के लिए उत्पाद की उपलब्धता पर कोई असर नहीं पड़ेगा बल्कि इससे उपभोक्ताओं को व्यापक विकल्प उपलब्ध रखने में मदद मिलेगी।

(ज) निष्कर्ष

60. प्राधिकारी पूर्वोक्त पर विचार करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि:

- (क) संबद्ध देश से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है;
- (ख) घरेलू उद्योग को इससे वास्तविक क्षति हुई है;
- (ग) यह क्षति संबद्ध देशों से होने वाले पाटित आयातों के कारण हुई है।

61. प्राधिकारी अंतिम निर्धारण होने तक संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर अनंतिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाना आवश्यक समझते हैं ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके।

प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पैरा 22 में दर्शाया गया पाटन मार्जिन सहयोगी निर्यातक के संबंध में पैरा 58 में उल्लिखित घरेलू उद्योग के क्षति मार्जिन से कम है।

62. कमतर शुल्क संबंधी नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन या क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क की निर्धारित राशि वसूल करने का प्रस्ताव करते हैं। तदनुसार प्राधिकारी यह सिफारिश करते हैं कि अंतिम निर्धारण होने तक संबद्ध देश के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सीमाशुल्क शीर्ष 87 के अंतर्गत आने वाले स्टील व्हील्स के आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से अनंतिम रूप से पाटनरोधी शुल्क लगाया जाए। पाटनरोधी शुल्क निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि होगी :-

	उप-शीर्ष/टैरिफ मर्के	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	8708.70	स्टील व्हील्स	कोई देश	चीन जन. गण.	मै0 झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं0	मै0 झेंगजिंग व्हील ग्रुप कं0	310.70	मी. टन	अम. डा.
2	8708.70	वही	वही	वही	कोई अन्य देश	कोई अन्य देश	368.18	मी. टन	अम. डा.

(ट) आगे की प्रक्रिया:-

63. प्रारंभिक जांच परिणामों को अधिसूचित करने के बाद निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई जाएगी:-

(क) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षों से इन जांच परिणामों पर टिप्पणियाँ आमंत्रित करेंगे और उन पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया जाएगा;

(ख) प्राधिकारी द्वारा ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, याचिकाकर्ता तथा अन्य हितबद्ध पक्षों को अलग से लिखा जा रहा है जो प्रारंभिक जांच परिणामों की तारीख से 40 दिनों के भीतर अपने विचार प्रस्तुत कर सकते हैं। कोई अन्य हितबद्ध पक्ष भी अपने विचार इन जांच परिणामों के प्रकाशन की तारीख से 40 दिनों के भीतर प्रस्तुत कर सकता है।

(ग) प्राधिकारी सभी हितबद्ध पक्षों को मौखिक अनुरोध करने का अवसर प्रदान करेंगे जिन्हें बाद में लिखित में प्रस्तुत किया जाएगा।

(घ) प्राधिकारी अंतिम जांच परिणामों की घोषणा करने से पहले आवश्यक तथ्यों को प्रकट करेंगे

डा. क्रिस्टी एल. फेर्नांडेज, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE -GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 12th January, 2007

Preliminary Findings**Subject : Anti-Dumping investigations concerning imports of Flat base Steel Wheels originating in/exported from China PR.**

No. 14/8/2005-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules (hereinafter also referred as Rules), 1995, thereof;

A. PROCEDURE:

1. The procedure described below has been followed:-

(i) On 31st May 2006, the Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, announced vide a public notice (initiation notification) published in the Gazette of India, the initiation of an anti dumping investigation with regard to imports of Flat base Steel Wheels (hereinafter referred to as subject product/good) originating in or exported from China PR (hereinafter also referred to as subject country). The anti- dumping investigation was initiated following a joint application filed by M/s. Kalyani Lemmerz Ltd, Pune and Wheels India Ltd, Chennai (the applicants) on behalf of the domestic industry representing a major proportion of the domestic production of the said product. The application contained evidence of dumping of the said product and of material injury resulting thereof, which was considered sufficient to justify the initiation of the anti-dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject country in accordance with the sub-rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping and to recommend the amount of anti-dumping duty which, if levied, would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

- (ii) As per sub-rule (5) of Rule 5 supra, the Authority notified the Embassy of subject country in India about the receipt of fully documented application from the applicant before proceeding to initiate the investigation;
- (iii) In accordance with sub rule (2) of the rule 6 supra, the Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporting producers, importers, industry associations, embassy of the country concerned and to the applicants and gave them an opportunity to make their views known in writing.
- (iv) As per sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the application to all the known exporters and the Embassy of subject country in India, together with a questionnaire for according market economy treatment. While for the purpose of initiation, the normal value was considered based on the constructed cost of production of the subject product in China PR, the Authority informed the known exporters / producers of the subject goods from the subject country that it proposed to examine the claim of the applicants in the light of para (7) & (8) of Annexure-1 of the Anti-Dumping Rules as amended. The known exporters were requested to furnish necessary information/ sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 to enable the Authority to consider grant of market economy treatment to cooperating exporters / producers who could demonstrate that they satisfied the criteria stipulated in the said paragraph.
- (v) According to sub-rule (4) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the relevant questionnaire to all the known exporters and the Embassy of subject country in India and other interested parties.
- (vi) The Embassy of subject country in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time
- (vii) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from the subject country.
- a) Zhengxing Wheel Group Co Ltd, North Circle Road, State Highway 319, Zhangzhou City, China
 - b) Zhejiang Eastern Top Group Corporation, 85, Jiangshe Road, Jiaojiang Taizhou Zhejiang China.
 - c) Zhejiang Jingu Automobile Components Manufacturing Co., Ltd., 28 Fengshou Road, Fuyang City, Zhejiang Province, China
- Only one exporter/producer responded to the exporter's questionnaire in a substantial manner and notice of initiation.

(viii) A copy of initiation notification along with the importers' questionnaire was also sent to the various importers listed in the application.

- a) Tata Motors Ltd. 24, Homy Modi Street, Hutatma Chowk, Fort Mumbai.
- b) Eicher Motors Ltd, 79-80, Satkar Building, Nehru Place, New Delhi – 19.

However, response in the form and manner of importers' questionnaire has been received only from one importer.

(ix) A copy of initiation notification was also sent to the industrial users of the subject product, listed in the application.

- a) Volvo India Pvt. Ltd, Yalachahally, Tavarekere Post, Hosakote, Bangalore.
- b) Ashok Leyland Ltd, 19, Rajaji Salai, Chennai.
- c) Swaraj Mazda Ltd, Village Asron, District Nawanshahar, Punjab.
- d) Mahindra & Mahindra Ltd., Automotive Sector, Road No. 13, Worli, Mumbai.

(x) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigations.

(xi) The Authority kept available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(xii) **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xiii) The investigation of dumping and injury covered the period from 1st January 2005 to 31st December 2005 (Also called the period of investigation or POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2002 to the end of POI (also called Injury period).

(xiv) The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of preliminary determination of dumping and resulting injury. The Authority conducted on-the-spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the cost of production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the applicants to ascertain if anti dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

(xv) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM, Excise Law Times etc., for wider circulation.

B. PRODUCT UNDER CONSIDERATION.

2. The product under consideration in the present investigation is Flat Base Steel Wheels (also described as Road Wheels, Disc Wheels and referred to as subject goods) of size 16" to 20" nominal diameter used in tubed tyre applications in commercial vehicles, originating in or exported from China PR. A wheel is an assembly of rim and disc with a demountable ring. The rim and disc produced in separate lines are welded together to form a wheel, which is mounted on the axles of vehicles and fitted with tyres to enable vehicle movement. Commercial vehicles classified as light, medium and heavy vehicles comprise of buses, lorries including trucks, trailers and tempos.

3. Wheels are defined under Chapter 87 of the Customs Tariff Act under the category "Vehicles other than railway or tramway rolling stock, and parts and accessories thereof", sub-heading 870870. The product includes all variants of Steel Wheels classifiable under customs sub-heading 8708.70, but the Authority considers it appropriate to exclude wheels used in vehicles other than those listed above i.e. tractors, passenger cars, motorcycles, tanks and other armoured fighting vehicles, cycles, scooters, aircraft, earth-movers, animal-drawn vehicles, hand propelled vehicles etc., and those used in tubeless tyre applications from beyond the scope of the product under consideration. The Customs classification, however, is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

C. LIKE ARTICLE.

4. The applicants have claimed that goods produced by them are like articles to the goods originating in or exported from subject country. There is no significant difference in the subject goods produced by the petitioners and those exported from subject country. With regards to the like article, the Authority notes that rule 2(d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject country, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification have been considered by the Authority. On the basis of the examination, the Authority notes that subject goods produced by domestic industry has characteristics similar to those imported from the subject country and to those sold

in the market of exporting country. In view of the above, the Authority holds that the Wheels produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject country are like articles within the meaning of the rules.

D. DOMESTIC INDUSTRY

5. The application has been jointly filed by M/s. Kalyani Lemmerz Ltd. and Wheels India Ltd. These producers are the only two domestic producers of the subject goods and have provided information relevant to the present investigations. They have also consented to participate in the proposed investigation. Since the applicants constitute 100% of domestic production, the requirement of standing under Rule 5 of the Rules supra is fully met.

E. DUMPING.

6. Under Section 9A (c) I of the Customs Tariff Act 1975,

“Normal value in relation to an article means:

“The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

“When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-

“a) Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory to an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or

“b) The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6)”;

“Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.”

7. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section 9A(1)(c). Zhengxing Wheel Group Co Ltd, Zhangzhou City, China responded to the Authority.

8. The applicants had identified wheel size, centre bore dia, pitch centre dia, bolt holes, stud-hole designation, offset, half dual spacing, weight & wheel load as different parameters of the subject goods. The exporter has also identified some of these parameters in their response. On the basis of the preliminary investigations conducted, the Authority considers it appropriate to use wheel size and weight as essential product parameters for the purpose of comparison between the normal value and export price, pending further investigations.

E1 Normal value determination for China PR

Views of the domestic industry

9. The domestic industry has submitted that China PR, the subject country under present investigation in the present proceedings, is a Non-Market Economy country and treated as such by the European Commission, the United States and even India. Therefore normal value has to be determined in accordance with the Para 7 and 8 of Annexure I of the Anti Dumping Rules. Accordingly, the domestic industry had proposed Germany as the appropriate surrogate country for the purpose of calculating normal value in China and had furnished some evidence with regard to price of the subject goods in Germany during the period of investigation. In an alternate to the price from a market economy third country, the domestic industry has determined normal value as the price payable in India, considering the cost of production in India, duly adjusted to include selling, general and administrative expenses and reasonable profit.

Legal provisions in India

Para 7 of Annexure I under the Rules, which has been inserted by notification no. 44/99– Cus (NT) dated 15th July, 1999 reads as under:

“7. In case of imports from non-market economy country, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in a market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India, or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin.

Market Economy Treatment (MET)

Para 8 of Annexure 1- amended on 04.01.2002 reads as follows:

8.(1) "The term "non market economy country" means any country which the designated authority determines as not operating on market principles of cost or pricing structures, so that sales of merchandise in such country do not reflect the fair value of the merchandise, in accordance with the criteria specified in sub-paragraph (3).

8.(2) "There shall be a presumption that any country that has been determined to be, or has been treated as a non-market economy country for the purpose of an anti dumping investigation by the Designated Authority or by the competent Authority of any WTO member country during the three-year period preceding the investigation is a non-market economy country.

"Provided, however, that a non-market economy country or the concerned firms from such country may rebut such a presumption by providing information and evidence to the Designated Authority that establishes that such country is not a non market economy country on the basis of criteria specified in sub-paragraph (3)

8.(3) "The designated authority shall consider in each case the following criteria as to whether:

" a) the decisions of concerned firms in such country regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment, are made in response to market signals reflecting supply and demand and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;

" b) the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;

" c) such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms, and

" d) the exchange rate conversions are carried out at the market rate;

"Provided, however, that where it is shown by sufficient evidence in writing on the basis of the criteria specified in this paragraph that market conditions prevail for one or more such firms subject to anti-dumping investigations, the designated authority may apply the principles set out in paragraphs 1 to 6 instead of the principles set out in this paragraph."

10. Apart from one exporter/producer from China, none of the others responded to the questionnaire sent by the Authority.

Views of the importer

11. The importer, M/s. Tata Motors Ltd., (hereinafter referred to as TML) opposed the choice of Germany as an appropriate market economy country for establishing normal value on the ground that it violates the statutory principle for selection of such a third country keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question as per para 7 of Annexure 1 of the Rules. TML held that Germany and China are far removed in the level of economic development and more so with reference to the product in question. TML also opposed the alternative suggestion that the cost of production in India for the like product inclusive of selling, general and administrative expenses (SGA) and profit may be considered as the normal value, stating that Para 7 provides for basing normal value on the price actually paid or payable in India for the like product with due adjustments for a reasonable profit margin. TML further held that the normal value derived from taking Germany as the surrogate country was unreliable, as the average weight per piece of wheel was much higher than the accepted weight, without indication of what constituted the differences in weight, value or the basis for the adjustments claimed. Besides, the huge difference between the constructed normal value based on petitioner's costs and the normal value based on Germany's prices showed the latter's unreliability as a surrogate.

12. No other interested party submitted any comments or names of the producers/exporters in analogue countries willing to submit the data to the Designated Authority in spite of the letter sent to all interested parties in this respect. Thereafter, the Authority requested producers of subject goods in the analogue countries of Germany, Brazil and Turkey made known in the application and other communications by the domestic industry to submit the required details regarding selling prices of the subject goods in their country and the data to the Designated Authority. However, no producer in the chosen analogue countries submitted any response till date.

(a) Cooperation:

13. One Chinese producer/exporter namely M/s Zhengxing Wheel Group Co Ltd, made themselves known during the process of investigation and responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to questionnaire pertaining to market economy status and also various appendices mentioned in the exporters' questionnaire.

(b) Normal Value & Export Price:

14. With regards to the responses filed by M/s Zhengxing Wheel Group Co Ltd, it is claimed that the exporter had no state shareholding. The company was established in November 1996 and registered legally as a collective enterprise sponsored by Zhangzhou Xiangcheng Collective Industry Association. In July-August 2001, it changed to a privately owned sole proprietorship and thereafter to a joint stock cooperative enterprise, which was subsequently restructured as a fully limited liability company in June, 2003. It has two subsidiaries producing the components of the subject product and the chairman of the board of directors of these subsidiary companies and of the parent company was the same. The control of the company was vested in a shareholder of Chinese nationality holding 84% of shares and it was governed by the Company, Labour and Accounting Laws of the subject country.

15. While the protocol of accession of China to the WTO does not indicate the subject product as being subject to state control, steel products figure in the Annex of products under designated trading, with liberalization to be within three years of accession. The exporter claimed that free export of goods was allowed without any quota and that they were free to negotiate prices and quantities with customers without outside involvement as well as to price the product according to the market and the production costs. Chinese steel prices are not subject to any governmental control or administrative pricing mechanism. They claim that China enjoys a cost advantage in steel as it is the largest producer in the world and that factor together with its somewhat lower quality means that it commands a lower price in the international markets. But a price of approximately RMB 3760 per ton or US \$ 465 PMT cannot be considered too low and may be treated as reflective of market conditions. Further, they also procure inputs for manufacture locally through short term or spot contracts, pay normal rates for utilities without subsidy and enjoy the incentive of 17% return of VAT on export sales. Profits from exports are distributed among shareholders after the obligatory statutory and discretionary reserve fund requirements are met.

16. The company was required to furnish information on asset valuation during the change-over from a collective enterprise to a sole proprietorship, the source of funds from which the sole proprietor repaid the other natural persons in the enterprise, the articles of the association governing the conversion from sole proprietorship to joint stock cooperative enterprise and details of the production process and raw materials used.

Views of the domestic industry

17. The domestic industry has submitted as follows:

(i) As per para 8(i), the question whether costs of major inputs substantially reflect market values implies that these costs should conform to the prices prevailing in international market. The producer has to establish that the price of steel purchased for production of the subject product - accounting for 70-80% of manufacturing cost - is comparable to the international price.

(ii) The Chinese Government has provided many direct and indirect benefits to the steel industry such as cash grants, land grants, transfer of ownership interest not on commercial considerations, converted debt to equity in steel companies, besides granting debt forgiveness, no action on non-performing loans, preferential loans, directed credit, and tax incentives as income tax exemptions/ reduction. State involvement was also indicated through targeted infrastructure development, manipulation of raw material prices and maintaining the value of Chinese currency, the renminbi (RMB). There is no claim by the exporter that the prices of steel paid by the company are comparable to those in the international market and thus the company cannot be granted market economy status unless it establishes that its input prices substantially reflect the market value.

(iii) The exporter has not presented the cost of production from the steel stage, claiming that the production process employed by them is mere assembly of disc, rim and ring. Therefore, the entire production process and the resultant cost break-up have been presented only for the stage of assembly. The cost of production statement shows raw material costs at 95% of costs, indicating that these were only for assembly operations, with rim, disc and ring apparently considered as inputs.

(iv) Contradictory claims have been made with respect to the production process followed, with different inputs and information being given on the process, production costs, capacity calculations, raw materials identified and business decisions on inputs procurement.

(v) That it was inconceivable that a company with production capacity of 5.5 million wheels with 2600 employees in a factory area of 210 thousand sq. mts with about 32 million yuan investment and export sales to 35 countries of the world would undertake merely an assembly of operations and not be engaged in production of disc, rim and ring.

(vi) The exporter has not provided information on the activities of its subsidiaries or affiliated companies, which has to be given if they are involved in

the production of disc, rim or ring. Therefore, the response to the exporter questionnaire was incomplete.

(vii) As the exporter has failed to establish the claim of market economy status and wilfully and consciously attempted to provide incomplete information, the Authority should provisionally reject the claim for the market economy status at this stage and determine normal value as established by the petitioner.

Examination by the Authority

18. The Authority has taken cognizance that the exporter has submitted substantive evidence in their response along with the relevant facts with which they want to rebut the presumptions as mentioned in para 8 of Annexure 1 of the Rules and Non Market Economy questionnaire sent to them regarding grant of market economy status to their company. The Authority notes that the issue of raw material prices i.e., of H.R. steel coil, paid by the company is vital to an examination of both market economy treatment as also correct assessment of its cost of production. In a situation where the raw material prices are significantly lower than the prevailing market rates within China as also in the international market, not only a vital condition for market economy treatment is not satisfied but also costs may be underestimated. The exporter has not so far established that prices of major inputs substantially reflect market values. In view of this, for the purpose of preliminary findings, the Authority has not granted them market economy treatment.

19. The Authority notes that applicants had provided evidence of price or constructed value in a market economy third country—Germany. While disputing the claim of the domestic industry to treat Chinese producers as non-market economy, neither the Chinese producer nor importer nor any other interested party made any substantiated claim or advanced any substantiated evidence with regard to price or constructed value in a market economy third country. There has been no response from the surrogate country producers/exporters in response to the exporter's questionnaire sent by the Authority. Under the circumstances, the Authority has provisionally determined that the only option available for the purpose of provisional findings is to determine normal value considering price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted, to include a reasonable profit margin.

20. Thus, the Authority has constructed the normal value by taking into account cost of production in India, duly adjusted to reflect international raw material prices and optimum conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit. The main raw material is hot rolled steel coil. However, as the investigation proceeds further, the Authority proposes to continue examination

of the appropriateness of any market economy third country for the purpose of determination of normal value as per para 7 of Annexure 1 of the Rules, should information about their appropriateness price or constructed value be received by the Authority.

Methodology for working out dumping margin for the responding exporter and other exporters

E.2 Export Price

21. The Authority for the purpose of the provisional findings has not taken into account the official price for calculation of dumping margin and price undercutting, as the data contained in the official statistics is much lower than what has been reported by the exporter and importer. Accordingly, the export price as indicated by the exporter has been adopted with suitable modification for conversion of number to weight. A weighted average export price to India has been determined for the subject product. Price adjustments claimed on account of adjustments like freight and bank charges have been provisionally allowed subject to verification. The weighted average export price has been taken as US \$ *** PMT and adjusting for inland freight and bank charges, the ex-factory export price comes to \$ *** PMT. The Authority proposes to examine further the response of the exporter as the investigation proceeds in order to conclude its decision on a definitive basis.

E.3 Dumping margin

22. The Authority has worked out the dumping margin by making a comparison between the normal value and export prices at ex-factory level, based on the constructed normal value and the weighted average export price determined for the product. The weighted average overall dumping margin thus determined is seen to be significant. For the other exporters, the weighted average of the lowest export price has been taken and the dumping margin computed. This is as shown below:-

Price (in Rs / kg)	Weighted average
Dumping margin for the co-operating exporter	
Constructed Normal Value	***
Export Price	***
Dumping Margin	***
Dumping Margin %	46.89

Dumping margin for other exporters	
Export Price	***
Dumping Margin	***
Dumping Margin %	63.01

Source: Exporter, DGAD.

F. INJURY AND CAUSAL LINK

23. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. Annexure-II (ii) of the Rules provides as under:-

(ii). "While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices ...the designated authority shall consider whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.

The Rules further provide that

(iv). "the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

24. For the purpose of injury analysis, the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports on the subject goods on the domestic industry and its effect on the prices and profitability. To examine the existence of injury and causal links between dumping and injury, if any, since positive dumping margin has been established for the exports from the subject country, entire exports from the subject country has been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal link examination.

Views of the importer

25. The importer holds that the contention of injury to the domestic industry was incorrect as the domestic selling price was above the non-injurious price. The constructed normal value based on the petitioners' costs of Rs. *** per kg or Rs. *** per set was also the NIP since it takes into account actual cost of production plus 5% profit margin. During the POI, the importer purchased about *** wheel sets of specification 7.5-20 from the domestic industry at an average price of Rs.***, which was at the non-injurious price adjusted for basic customs duty for raw materials. Absence of injury was corroborated from the indexed profits during the POI being 44% higher than in the base year 2002-03 and though lower in the POI compared to 2004-05, they were still adequate from the perspective of the non-injurious price. In addition, as net sales realisation was close to the NIP, the domestic industry was not injured. Besides, the constructed normal value which depicts a healthy dumping margin would be lower if domestic industry's actual costs are verified and correctly determined. The industry appears to have realized a price equal to or greater than the NIP and hence has suffered no injury.

Examination by the Authority

A. Volume effect of dumped imports and impact on domestic industry

Import statistics

26. The information provided by secondary sources (DGCI&S) show that the product has been reported under customs classifications 8708.7000 and 8708.9100. Since the product description is only dispositive, all imports of subject goods irrespective of their classifications have been included for the purpose of determination of volume, value and average import price. Upon initiation of investigations, DGCI&S was requested to provide information with regard to imports of the subject product. The information provided includes only custom classifications 8708.7000. Its analysis shows that imports of the subject product enter India only from the subject country at present. Details in the POI are as below:-

Summary data from secondary sources

Wheels imports, 2005	Volume (MT)	Value (Rs. Lacs)	Avg price (Rs/kg)
DGCI&S	9245.65	3653.46	39.52
IBIS	7399.60	2605.67	35.21

Source: DGCI&S, domestic industry.

However, the domestic industry claim that both these secondary sources do not state the quantity of dumped imports, basing this statement on the production

data of vehicles in the period of investigation reported by the Society of Automotive Manufacturers (SIAM). Assessed imports on this basis are 18405 MT.

27. The data submitted by the exporter and importer indicate that the import volume lie in the region of the assessment made by the domestic industry.

As per exporter	Grade	2004-05		POI	
		Indexed	MT *	Indexed	MT *
	6.00-16"	0.02	0.02	18.17	18.17
	7.00-20"	0.01	0.01	0.98	0.98
	7.50-20"	16.23	16.23	213.93	213.93
	Total	16.26	16.26	233.08	233.08
As per importer	16" rim	-	-	2.50	2.50
	20" rim	4.14	4.14	97.50	97.50
	Total	4.14	4.14	100	100

Note: *: Computed, based on weight of the wheel indicated by exporter as:
(a) 6.0-16": 20.5 kgs; (b) 7.0-20": 40 kgs; (c) 7.5-20": 47 kgs.

The data contained in the official statistics is much lower than what has been reported by the exporter as well as the importer. The Authority has, therefore, considered it appropriate to base the preliminary findings on information furnished by the exporter, pending further investigations.

Assessment of demand

28. For the calculation of the domestic consumption/demand of the subject goods, the Authority added the sales volume of the domestic industry and other Indian producers to the total imports into India. The domestic industry claim that IBIS data includes information on imports reported at selected ports but all the tariff heads under which the subject goods are being imported while DGCI&S import statistics mention the subject goods for a given tariff head only. Nevertheless, both sources reportedly understate the quantity of imports. Since the truth of this is evident from the responses made by the exporter and the importer showing imports much higher than reported in the secondary sources, the Authority has relied upon the exporter data for the purpose of import statistics on the quantity and price of the subject goods for the purpose of provisional findings pending further examination. A copy of the import data taken into account by the Authority is also kept in the public file for the benefit of all interested parties.

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Sales of Domestic industry	52702	70757	88560	80818
Imports - Subject country			***	***
Demand	***	***	***	***
Indexed	100	134	171	191

Source: Domestic industry, exporter.

From the table, it may be provisionally concluded that the demand for the subject goods in India shows positive growth and increased by 91% in the injury period.

Import volumes and market share

29. With regard to the volume of the dumped imports, it has been examined whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Total Imports			***	***
Imports from China			***	***
Indexed			100	1489
Market share of Chinese imports (%)			100	100
Total sales of domestic industry	52702	70757	88560	80818
Demand	***	***	***	***
Share of Chinese imports in demand (%)			1.49%	19.75%
% share of domestic industry in demand	100%	100%	98.51%	80.25%
Production of domestic industry	***	***	***	***
Chinese imports relative to production			1.50%	24.44%

Source: Domestic industry, exporter.

30. On examination of the import data, the Authority noted that the imports increased in absolute terms from the subject country from just *** MT in 2004-05 to *** MT in the period of investigation (POI). Further, relative to the domestic demand, the imports from the subject country increased from 1.49% in 2004-05 to 19.75% in the POI, while relative to domestic industry's production, they increased from 1.50% to 24.44% respectively. Moreover, while the share of Chinese imports in demand increased to 19.75% in 2005, the domestic industry's share declined from 100% in 2003-04 to 80.25% in the POI. In view of this and there being no other domestic producer in India, the Authority has provisionally concluded that the dumped imports from the subject country show adverse volume effect.

31. The decline in the market share of the domestic industry is also observed when considering the quarter-wise purchases of the product made by the importer, TML, also a major domestic consumer of the subject product. Purchases from the domestic industry have been as follows:

Purchases from the domestic industry by TML (importer)						
Quarter	20" rim			16" rim		
	Qty (Index)	Value	Rate	Qty (Index)	Value	Rate
Jul-Sep 04	238	***	***	62	***	***
Oct-Dec 04	312	***	***	83	***	***
Jan-Mar 05	310	***	***	94	***	***
Apr-Jun 05	197	***	***	72	***	***
Jul-Sep 05	121	***	***	76	***	***
Oct-Dec 05	151	***	***	70	***	***
Data on exports to India as per exporter						
	20" rim exports (Indexed)			16" rim exports (Indexed)		
Jan-Mar 05			14.62			0.02
Apr-Jun 05			53.13			---
Jul-Sep 05			76.68			5.07
Oct-Dec 05			70.49			13.08

Source: Importer, exporter.

32. The Authority notes that purchases of 20" rim wheels by TML from the domestic industry which was about *** pieces in the 4th quarter of 2004 fell to *** pieces in 2nd quarter of 2005, while in the 16" rim segment, TML's purchases of about *** pieces in the 1st quarter of 2005 plummeted in the 2nd quarter of 2005. The unit rates of the product have risen slightly, despite the fall in volume. The Authority further notes that imports were more in the 20" rim segment than the 16" rim, soaring from a modest *** pieces in the 1st quarter of 2005 to almost *** pieces in the 3rd quarter.

B. Price effect of imports

33. For the purpose of this analysis, the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realisation (NSR) and the Non-Injurious Price (NIP) of the domestic industry have been compared with the landed price of imports from subject country to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports compared with the price of the like product in India, or whether such imports have depressed the prices or prevented price increases that otherwise would have occurred to a significant degree.

Parameter (Rs. /kg)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Landed Price			38.09	39.71
Net Sales Realization of Domestic industry	***	***	***	***
Price undercutting*			***	***
Price undercutting %			18	21

Note: * NSR minus landed price of imports

Source: Domestic industry, importer.

34. Price undercutting has been determined by comparing the landed value of dumped imports, with the weighted average net sales realisation (ex factory). In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered and the Central Excise duties paid have been excluded. The Authority notes that the landed value of imports from the subject country has been significantly below the net sales realization of the domestic industry resulting in significant price undercutting.

Price suppression

35 In addition to significant price undercutting, dumped imports have caused severe price suppression in the Indian market as evident from the following table:

Parameter (Rs/kg)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Cost of Sales of the domestic industry	***	***	***	***
Year by year change	100	101	115	128
Net Sales Realization	***	***	***	***
Year by Year Change	100	104	120	130
Landed Value of Chinese imports			***	***
Year by year change			100	104

Source: Domestic industry, importer.

The domestic industry has claimed that since the input cost was arising, the industry was prevented from effecting price increases as imports were suppressing their prices. Further, the provisional non-injurious price for the domestic industry in the POI was Rs *** per kg, against which the landed value was Rs. 39.71 per kg. The Authority noted that there has been significant price under-selling suffered by the domestic industry.

Situation of the Domestic Industry: Preliminary remarks

36. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the

industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules supra. It is noted that application for imposition of anti dumping duty has been jointly filed by Kalyani Lemmerz Ltd and Wheels India Ltd, who account for 100% of total Indian production. The application, therefore, satisfy the standing and petitioner constitutes domestic industry within the meaning of the Rules. The Designated Authority therefore, has examined injury to the domestic industry as prescribed under the Rule 11 of Rules.

37. The domestic industry has submitted that a product like wheels is a critical safety item for a vehicle and takes around 6-12 months for development and production. It requires preliminary design, customer approval, testing of stress analysis, tooling development and testing in-house as well as by the certifying authorities and customers. Therefore, it is infeasible to immediately replace loss of business due to imports in a short time. Besides, the domestic industry had set up capacities with the understanding that the majority of the sales would be to domestic producers. Though market development is an on-going process for all products, to look for alternate avenues for the subject product was not feasible, given its limited demand in the export market. Dumping by the Chinese producers has severely undermined the efforts of the domestic industry.

Sales Volume

38. Sales volume of the domestic industry (DI) has been as under:

Volume (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
DI- Domestic Sales	***	***	***	***
Indexed	100	134	168	153
Imports from Subject country			***	***
Indexed (2004-05 = 100)			100	1489
Domestic Demand	***	***	***	***
Indexed	100	134	171	191
Share of China PR in demand (%)			1.98	19.75
Market share of DI in demand (%)	100	100	98.51	80.25

Source: Domestic industry, exporter.

The Authority noted that the sales volume of the domestic industry has increased till 2004-05 and then declined in the POI, while concurrently there has been a consistent increase in demand of subject goods in India. However, the domestic industry has not been able to get benefit of this increased demand as significant market share has been lost to imports from subject country, in the absence of any other domestic producer. Besides, the Authority has taken cognizance of the fact

that the subject product being in use only in very few countries in the world, requirements are limited, so that dedicated capacities created cannot be redeployed effectively nor the gap created by dumped imports bridged by exports.

Profits

39. Profitability position of the domestic industry has been as under:

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Profit/Loss (Rs./Kg).**	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	72	(45)
Profit/Loss on Domestic sales	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	121	(69)
Interest	***	***	***	***
Indexed	100	62	74	99
PBIT	***	***	***	***
Indexed .	100	183	469	161

** Selling Price – Cost of Sales

Source: Domestic industry.

The Authority has observed that while the performance of the domestic industry had improved till 2004-05, it deteriorated steeply in the POI. Intensified dumping of the subject product in the POI impacted the financial parameters of the domestic industry.

The Authority examined the reasons for lower profits by the domestic industry in the year 2002-03 and 2003-04. It is found that Kalyani Lemmerz commenced commercial production in 1997-98 with modern technology/process producing better quality product, whereas Wheels India, Padi was an old vintage plant (1962). The domestic industry incurred a loss in 2002-03 due to relatively higher incidence of interest and depreciation expenditure in case of Kalyani Lemmerz coupled with sub-optimal capacity utilization. With the improvement in capacity utilization in 2003-04 & 2004-05, profitability of the domestic industry improved and the domestic industry reported profits in 2004-05. However, the profits once again deteriorated and the domestic industry suffered financial losses in the period of investigation.

Productivity

40. The productivity of the domestic industry is given in the table below. The Authority noted that productivity and sales per employee of the domestic industry, has been increasing till 2004-05, after which both these parameters declined. Thus,

there is evidence of injury in the POI which can be attributed to the dumped imports, though employment has been fairly steady since 2003-04.

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Sales of the DI (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	137	191	209
Employees (PUC) in Nos.	***	***	***	***
Indexed	100	121	117	122
Production (MT)	***	***	***	***
Productivity per Employee	***	***	***	***
Indexed	100	107	146	129
Domestic Sales (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	140	201	197
Sales per Employee (in Rs)	***	***	***	***
Indexed	100	112	169	158

Source: Domestic industry.

Return on Investment

41. Return on investments (profit before interest) shows similar trend as that of profits as is evident from the table below.

Parameter (Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
PBIT	***	***	***	***
Indexed	100	183	469	161
Capital Employed (NFA)	***	***	***	***
Indexed	100	109	142	142
Return on capital employed (NFA) (%)	***	***	***	***
Indexed	100	168	331	113

Source: Domestic industry.

It is noted from the above table that profits have risen to almost Rs. *** during 2004-05 but declined to less than Rs.*** in the POI. Return on capital employed improved till 2004-05, but declined steeply in the POI.

Capacity, Production and Capacity Utilization

42 The capacity, production and capacity utilization of the domestic industry has been as under:

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Capacity in No. ('000)	2380	2380	2724	2724
Indexed	100	100	114	114
Production in No. ('000)	***	***	***	***
Indexed	100	131	162	157
Capacity Utilization (%)	***	***	***	***
Indexed	100	131	142	137
Domestic Demand (MT)	***	***	***	***
Indexed	100	134	171	191

Source: Domestic industry.

The domestic industry claims that it increased its installed capacity in 2004-05 in anticipation of demand, but capacity utilisation has declined in POI as production declined. Demand however, has been consistently increasing, but the increase appears to be met by the rising imports, rather than by increased domestic production.

43. The domestic industry has further submitted as follows:

- (i) Though they were exploring alternative markets, the process of new market development was elaborate and time-consuming, and even so, the gap created by the loss of home market business would be difficult to fill.
- (ii) Presently only one importer, TML has begun importing from the subject country, but the continuation of the trend would result in others following suit. In *these* circumstances, the industry would have to close down its capacities for the production of the product. One single exporter from China has the capacity to meet the entire Indian domestic market demand and there are reported to be almost 70 known producers of the product in the subject country.
- (iii) An attempt made by domestic industry to redeploy un-unutilized capacity of component production lines for the subject product to manufacture components for other products adversely affected profitability.
- (iv) Capacity expansion effected in 2004-05 on the basis of the importer's indication, has been rendered of no utility due to resort to imports.

Factors affecting domestic prices

44. The imports from subject country are resulting in price undercutting and price underselling in the Indian market. The landed price of imports from subject country as a whole is significantly below the non injurious price of the domestic industry. Reduction in the landed price of imports appears to have impacted the domestic industry through price suppression.

Magnitude of dumping margin

45. The dumping margin for product imports from the subject country has been computed in para 22 and found to be significant.

Inventories

46. Inventories position with the domestic industry has been as under:

Parameter (in MT)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Average stock of inventory	***	***	***	***
Indexed	100	124	116	173
Sales volume	***	***	***	***

Source: Domestic industry.

The Authority noted that the sales volume of the domestic industry declined in the POI after increasing up to 2004-05. Inventories have remained a small percentage of sales as the product is made to order and effort to avoid lock-in of working capital is consciously adopted by the domestic industry. This parameter is being ignored for injury analysis in view of the industry's submission of production made-to-order.

Cash Flow and Cash Profit

47. All the constituents of the domestic industry are multi product companies; therefore, examination of cash flow of the entire company may not be appropriate for the injury purposes. The Authority therefore, has examined cash profit situation of the domestic industry, which is given in the following table.

Parameter (in Rs. Lakhs)	2002-03	2003-04	2004-05	POI
PBT	***	***	***	***
Indexed	(100)	(2)	121	(69)
Depreciation	***	***	***	***
Cash profit	***	***	***	***
Indexed	100	221	374	184

Source: Domestic industry.

It is evident from the above that cash profit situation of domestic industry, which has been improving earlier, deteriorated during the period of investigation.

Employment

48. Employment level of the domestic industry has been as under:

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Employees (No:)	***	***	***	***
Indexed	100	121	117	122
Wages (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	118	122	138

Source: Domestic industry.

The Authority noted that the employment level of the domestic industry has remained stable from 2003-04. The domestic industry being multi-product companies, employment levels per se may not be a conclusive indicator of injury. The domestic industry has submitted that though the deleterious effects of dumping are not visible so far, sustained dumping would have a significant adverse impact. A constituent of the domestic industry had to re-deploy employees from the production of the subject product to that of other products.

Wages and Ability to raise capital

49. Wages of the domestic industry has been as under:

Parameter	2002-03	2003-04	2004-05	POI
Wages for PUC (Rs. Lakhs)	***	***	***	***
Indexed	100	118	122	138
Production (MT)	***	***	***	***
Wages/ unit of production	***	***	***	***

Source: Domestic industry.

The Authority noted that wages of the domestic industry in absolute terms had increased. Simultaneously, domestic production has also increased resulting in reduction of wages per unit of production. Therefore, this parameter is not a cause of injury to the domestic industry. Further, no evidence has been placed before the Designated Authority to substantiate the fact that the domestic industry has been facing problems with regards to the ability to raise capital.

Growth

50. Status of various parameters of growth is given in the following table.

Growth in %	2003-04	2004-05	POI
1. Sales Volume	34.26	25.16	(8.74)
2. Unit selling price	3.92	15.18	7.38
3. Cost of production	1.40	13.37	10.01
4. Production	29.40	32.89	(8.50)
5. PBIT	83.08	156.35	(65.74)
6. Cash profit	120.68	69.60	(50.91)
7. Market Share		(1.49)	(19.75)
8. ROI	1.14	2.75	(3.67)

Source: Domestic industry.

The table above shows that majority of the injury parameters have been adversely affected during the injury period and are showing negative growth.

- i) Performance of the domestic industry deteriorated in the POI after improving upto 2004-05 in terms of production, sales volumes, capacity utilization, productivity, market share, profits, return on investments, cash flow, growth, etc.
- ii) Imports resulted in significant price undercutting. The domestic industry suffered price suppression and price underselling.

Threat of injury

51. Annexure II to the Rules provides as under in this regard.

“A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the Designated Authority shall consider, inter-alia, such factors and;

- (a) “a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;
- (b) “sufficient freely disposable or an imminent, substantial increase in capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian market, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;
- (c) “whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and,
- (d) “inventories of the article being investigated.”

The domestic industry has submitted that the continuing imports of the product from the subject country pose threat of material injury to it in the following ways:

- (i) Increase in imports in absolute terms has led to a fall in their market share.
- (ii) The potential increase in imports is greater as prices offered by the Chinese exporters are lower. Thus, the orders placed on foreign exporters have increased.
- (iii) The demand for the product has consistently increased and as it is not available off-the-shelf, supply orders have to be placed well in advance.
- (iv) Significant price undercutting would prompt consumers to increase the off-take from foreign producers or force the domestic industry to reduce prices.
- (v) The capacities created by Chinese exporters in the home country exceed home market demand.

G. CONCLUSIONS ON INJURY

52. There has been significant increase in the volume of dumped imports from subject country at the absolute level and also in relation to total demand of subject goods into India. These imports have increased significantly from 2002-03 to the POI and these had significant price effect on account of dumped imports resulting in price suppression and price undercutting. In fact, the prices of the domestic industry have been suppressed on account of dumped imports from subject country. The undercutting margin has been determined from the subject country for the POI and is considered as significant. Though the sales volume has increased during the injury period in absolute terms, the domestic industry has suffered significant decline in market share. Sub-optimal increase in respect of a parameters in period of investigation, such as production (about 30% lower increase than demand), capacity utilization (lower than optimum), slump in profits in POI, decline in market share in demand (19.75%), positive price undercutting, low levels of return on capital employed, significant dumping margin, negative growth in respect of a number of parameters show significant deterioration in the performance of the domestic industry over the injury period. Parameters such as employment and wages do not reflect injury. On the basis of the above analysis, the Authority provisionally concludes that the domestic industry has suffered material injury.

H. CAUSAL LINK

53. In order to reach its conclusions on the cause of the injury suffered by the domestic industry and in accordance with Article 3.5 of Agreement of Anti Dumping and as per para (v) of Annexure II under Rule 11 under Customs Tariff Act as amended, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation of the domestic industry. Known factors other than the dumped imports, which could at the same time have injured the domestic

industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports.

54. (i) Effect of dumped imports

(a) Significant increase in the volume of dumped imports has resulted significant decline in market share of the domestic industry. Decline in market share of the domestic industry as a consequence of increase in the market share of the subject imports prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate with the increase in the demand in the market. As a result, the sales of the domestic industry did not increase to such an extent that the domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, growth in production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of decline in the market share of the domestic industry.

(b) Significant price undercutting caused by imports prevented the domestic industry from increasing its prices to the extent of increase in inputs costs. Consequently, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated after showing consistent improvement. Whereas the domestic industry was able to increase prices in 2003-04 and 2004-05, its performance deteriorated in the POI due to the dumped imports, which prevented it from effecting legitimate price increases.

55. (ii) Effect of Other factors

(c) Contraction of demand or Changes in the pattern of consumption

The Authority notes that there is no contraction in the overall demand during the period under consideration. On the contrary, the overall demand has increased significantly during the injury period. The Authority also provisionally concludes that there is no apparent change in the pattern of consumption.

(d) Volume and Prices of imports not sold at the dumped prices

According to the available information, the total import volume of the product concerned originating in countries other than the subject country are nil and therefore, they are considered not to have had any impact on the domestic industry.

(e) Trade Restrictive practices of and competition between foreign and domestic producers

The Authority notes that there is a single market for the subject goods where dumped imports from the subject country compete directly with the subject goods produced by the domestic industry. The Authority also notes that the imported product is sold to meet the similar commercial grades and specification as domestically produced subject goods and that the imported subject goods and domestically produced goods are like articles and are used for similar applications/end uses.

(f) **Developments in Technology, Export performance and productivity of the Domestic Industry**

On the basis of the examination of the records of the petitioner, the Authority provisionally holds that developments in technology, has not been a relevant factor for the injury to the domestic industry.

With regard to the export performance of the domestic industry, the Authority notes that though there have been some exports by the domestic industry during the injury period, these form a very insignificant part of the total sales of the domestic industry. It is further noted that the performance with respect to various economic indicators have been determined with respect to domestic sales only. Hence, the Authority provisionally holds that material injury suffered by the domestic industry may not as a result of the export performance of the domestic industry.

As regards improvement in productivity, the Authority notes that during the period under consideration, the productivity measures as output per person employed per year has rather improved during the injury period. On the basis of the examination, the Authority provisionally holds that the productivity per se is not the cause for the injury to the domestic industry.

56. **CONCLUSION ON CAUSATION**

Significant increase in the volume of dumped imports has resulted significant decline in market share of the domestic industry. It is further seen that decline in market share of the domestic industry as a consequence of increase in the market share of the subject imports prevented the domestic industry from increasing their sales commensurate with the increase in the demand in the market. As a result, the sales of the domestic industry did not increase to such an extent that the domestic industry could have optimally utilized its capacity. Consequently, growth in production, sales and capacity utilization of the domestic industry suffered as a result of decline in the market share of the domestic industry. Significant price undercutting caused by dumped imports prevented the domestic industry from increasing its prices to the extent of increase in inputs

costs. Resultantly, profits, cash flow and return on investment of the domestic industry deteriorated in the POI after showing consistent improvement. Significant price undercutting and substantial increase in volume of dumped imports adversely affected the performance of the domestic industry in terms of profits, cash flow, return on investments, which parameters deteriorated in the POI after improving significantly till 2004-05.

57. The Authority has, therefore, provisionally concluded that the dumped imports originating in the subject country have caused material injury to the domestic industry within the meaning of Rule 11 of Anti Dumping rules and article 3.5 of the Agreement of Anti Dumping.

Magnitude of Injury Margin

58. The Authority note that there is a significant different between price data submitted by the exporter and the import data available from DGCI&S. Subject to reconciliation and verification of the same, the import price data of the importer has been used for the determination of landed value of the subject good from the responding exporter for the purpose of determination of provisional injury margin. The non-injurious price determined by the Authority has been compared with the landed value determined provisionally for computation of injury margin. This is shown below:

Injury margin calculations (in Rs)			
Non-Injurious price	Landed value	Injury Margin	IM %
***	39.71	***	35.28
***	37.45	***	43.44

Indian Industry's interest.

59. The purpose of anti dumping duties in general is to eliminate dumping which is causing injury to the domestic industry and to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the products manufactured using subject goods and consequently might have some influence on relative competitiveness of these products. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices and would prevent the decline of the domestic industry. It would not restrict imports from subject country in any way, and therefore, would not affect the availability of the product, but rather help maintain wider choice to the consumers of subject goods

J. CONCLUSIONS:

60. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

- (a) The subject goods have been exported to India from the subject country below its normal value.
- (b) The domestic industry has suffered material injury;
- (c) Injury has been caused by dumped imports from the subject country.

61. The Authority considers it necessary to impose an anti-dumping duty provisionally, pending final determination, on all imports of subject goods from subject country in order to remove the injury to the domestic industry. The margin of dumping determined by the Authority indicated in para 22 is lower than the margin of injury to the domestic industry at para 58 in respect of the cooperating exporter.

62. Having regard to the lesser duty rule, the Authority proposes levy of fixed amount of anti dumping duty equal to the dumping margin or injury margin whichever is less. Accordingly, the Authority recommends that the provisional anti dumping duties be imposed from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government on imports of Steel Wheels falling under Custom Heading 87 originating in or exported from subject country pending final determination. The Anti-Dumping duty shall be the amount mentioned in column 8 of the following table: -

S.N o:	Sub- Head -ing/ Tariff Items	Descrip tion of Goods	Countr y of Origin	Countr y of Export	Producer	Exporter	Amt	Unit of Measur ement	Currency
1	8708.70	Steel Wheel s	Any	China PR	M/s Zheng- xing Wheel Group Co:	M/s Zheng- xing Wheel Group Co:	310.70	MT	USD
2	8708.70	-do-	-do-	-do-	Any other	Any other	368.18	MT	USD

K. FURTHER PROCEDURE:

63. The following procedure would be followed subsequent to notifying the preliminary findings: -

- (a) The Authority invites comments on these findings from all interested parties and the same would be considered in the final findings;
- (b) Exporters, importers, petitioner and other interested parties known to be concerned are being addressed separately by the Authority, who may make known their views, within forty days from the date of preliminary findings. Any other interested party may also make known its views within forty days from the date of publication of these findings.

(c) The Authority would conduct further verification to the extent deemed necessary.

(d) The Authority would disclose essential facts before announcing final findings.

Dr. CHRISTY L. FERNANDEZ, Addl. Secy. and Designated Authority